खण्डः 3, अंकः 03 मार्च 2020

संश्लेषण

डी सी आर सी हिन्दी मासिक पत्रिका

कोरोनाः नीति बनाम राजनीति

डी.सी.आर.सी.
विकासशील राज्य शोध केन्द्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य संपादक
प्रो. सुनील के चौधरी

संपादक
डा. रमेश भारद्वाज
नागेन्द्र कुमार
शरद कुमार यादव

संपादकीय मंडल
डा. अभिषेक नाथ
कुँवर प्रांजल सिंह
आशीष कुमार शुक्ल

© डीसीआरसी 2020

रूपाकंनः आर किशोर

संश्लेषण

कोरोनाः नीति बनाम राजनीति

अनुक्रमिका

संपादकीय		i-ii
1. कोरोना की नीति बनाम राजनीति	– मोहिनी मित्तल	1–3
2. कोरोना : नीति बनाम राजनीति	– डॉ० अर्चना सौशिल्या	4–8
3. कोरोनाः नीति बनाम राजनीति	– नवीन कुमार	9–11
4. कोरोनाः नीति एवं राजनीति का महत्व और भूमिका	– जसदीप कौर	12–15
5. सबका साथ कोरोना को मात	– डॉ० हितेन्द्र बारगल	16–18
6. कोरोना महामारी प्रबंधनः नीति एवं राजनीति के मध्य महिलाओं की स्थिति का अध्ययन	– काजल	19–21
7. कोरोना संकटः शिक्षा का अंकीयकरण (डिजिटलीकरण)	– सृष्टि	22–24
8. कोविडः राजनीति में नव विमर्शों का आह्वान	– गरिमा शर्मा	25–27
9. कोरोना संकट के वैश्विक आयाम	– महेश कुमार दीपक	28–31
10. भारत में करोना संक्रमण और राजनीति में संक्रमण	– डा अमित अग्रवाल	32–34
11. कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	–डॉ० महेश कौशिक	35–37
12. कोरोनाः धार्मिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण	– रजनी	38–41
13. कोरोना विपत्तिः भारत एवं विश्व	– राम किशोर	42–44

सम्पादकीय

विकासशील राज्य शोध केन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय की हिन्दी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के वर्ष 2020 के इस तृतीय अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए एक बार पुनः हमें अत्यंत सुख का आभास हो रहा है। संश्लेषण की यह पहल केन्द्र से संबद्ध सभी शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों हिन्दी भाषा में समसामयिक विषयों को एक मंच पर लाने की एक सामूहिक पहल है। संश्लेषण का प्रत्येक अंश उस माह की ज्वलंत वास्तविकता एवं समसामयिकता को एक निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ रुप से प्रकट करने का हमारा एक न्याय्य प्रयास भी है।

वर्ष 2020 का प्रारंभ सम्पूर्ण विश्व के लिए एक अत्यंत त्रासदी के रुप में उभर कर आया। 1920 के दशक के आर्थिक संकट के पश्चात पृथम दृश्या विश्व की इस नई पीढी ने कोरोना के रुप में एक स्वास्थ्य संकट को दृष्टिगत किया। व्यक्ति से व्यक्ति में संचारित इस रोग ने एक माह में ही विश्व के लगभग समस्त राष्ट्रों को अपने संक्रमण से प्रभावित कर दिया। कथित रुप से चीन से प्रसारित इस रोग ने इटली सहित यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों को इस रोग से इतने भयावह रुप में संक्रमित कर दिया जिसके कारणवश मानवीय हानि एंव विनाश के साथ–साथ इस रोग न सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक, राजनीतिक एवं वैदेशिक संबंधों को पूर्णरुपेण स्थगित कर दिया। रोग की गंभीरता तथा इसकी वैश्विक व्यापकता को दृष्टिगत करते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू. एच. ओ.) ने इसे एक वैश्विक महामारी की संज्ञा दे दी।

आरंभ में सामान्य स्तर पर प्रकट हुए कोरोना के इस रोग ने धीरे–धीरे भारत में भी एक विकराल रुप धारण कर लिया। रोग की गंभीरता को समझते हुए भाजपा नेतृत्व की मोदी सरकार ने एक–दिवसीय जन निषेधाज्ञा अर्थात जनता कर्फ्यू द्वारा समस्त भारतीयों को इस रोग का सामना करने के लिए धैर्य और सतर्कता का अनुसरण करने का आह्वन किया। संक्रमित रोगियों की भारत में निरंतर बढती संख्या को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार ने समस्त भारत को लॉकडाउन में परिणित करने का निर्णय लिया। कोरोना रोकथाम के लिए सरकार की इन निष्पक्ष प्रारंभिक पहलों की नीति को विफल करने के लिए निरंतर राजनीतिक प्रयास भी होने लगे।

विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केन्द्र ने 'कोरोनाः नीति बनाम राजनीति' विषय पर लेख आमंत्रित किये। तेरह उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप

सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख कोरोना संकट से संघर्षशील भारत की नीति तथा उसके पीछे राजनीति के विरोधभास को विश्लेषण करने का एक अथम प्रयास है।

संश्लेषण के इस अंक के समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ कोरोना से संबद्ध सामान्य जन जीवन के विविध आधारभूत बिंदुओं को भी प्रकट करते हैं। लेखकों के विचार स्वतंत्र चिंतन के परिचायक हैं जो उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को प्रद्रशित करते हैं।

वर्ष 2020 के संश्लेषण के इस मार्च माह के तृतीय अंक में प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम अप्रैल माह के अपने चतुर्थ समसामयिक तथा महत्वपूर्ण अंक में और अधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।

संपादक मंडल

बृहस्पतिवार, 14 मई 2020

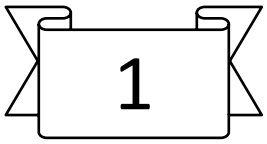

कोरोना की नीति बनाम राजनीति

मोहिनी मित्तल

शोधार्थी, जयपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान

कोरोना अथवा **COVID-19** वर्तमान में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित एक ऐसी गंभीर महामारी है,जो पूरी दुनिया को तेजी से प्रभावित कर रही है। इस की शुरुआत चीन के वुहान शहर से हुई, धीरे धीरे इस ने संपूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। अमेरिका, यूरोप सहित समस्त एशिया भो इससे प्रभावित हो रहा है। प्रभावित देशों द्वारा कोरोना के संक्रमण को रोकने हेतु विभिन्न नीतियां जैसे लॉकडाउन क्वारण्टाइन ,स्वच्छता मानकों आदि को अपनाया जा रहा है,इसे लेकर कुछ राजनीति भी देखी जा रही है, जहां अमेरिका द्वारा इसे चाइनीज वायरस कहा गया वहीं जवाब में चीन ने पलटवार करते हुए इसे अमेरिका द्वारा छोडा गया जैविक हथियार बताया गया। शुरुआत में विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए।भारत द्वारा भी इस महामारी के बढ़ते हुए, संक्रमण को रोकने हेतु नीतियां बनाई जा रही है।

कोरोना वायरस की सतह पर क्राउन जैसे कई उभार होते हैं, इन्है माइक्रोस्कोप से देखने पर सौर कोरोना जैसे दिखते हैं इसलिए इन्हें कोरोना वायरस नाम दिया गया। कोरोना वायरस अथवा वुहान वायरस विशिष्ट वायरस फैमिली से संबंधित है, यह सामान्य रोगों जैसे सर्दी ,जुकाम, बुखार व गंभीर रोगों जैसे श्वसन , आंत के रोगों, किडनी फेल होने आदि का कारण बनता है। जिस से मनुष्य की मृत्यु तक हो सकती है। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने हेतु कोई टीका नहीं बना है। व्यक्ति से व्यक्ति में यह वायरस तेजी से फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अधिक उम्र के लोग तथा जिन्हें पहले से अस्थमा, डायबिटीज व दिल की बीमारी है, उनके लिए यह अधिक घातक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इससे बचने हेतु दिशानिर्देश जारी किए हैं, जैसे अल्कोहल आधारित सैनेटाइजर का उपयोग करना, साफ सफाई का ध्यान रखना, खांसते छींकते वक्त मुंह नाक को ढंकना ,कचरे व अधपके पशु उत्पादों के सेवन से बचना, कोरोना प्रभावित व्यक्तियों से दूरी बनाना आदि ।साथ ही लक्षण दिखने पर चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

कोरोना के संक्रमण को फैलने से रोकने हेतु भारत सरकार भी लगातार प्रयास किया जा रहा है। डैशबोड जारी किया गया। बाहर से आए व्यक्तियों की स्क्रीनिंग की जा रही है। क्वारंटाइन व लॉकडाउन को लागू किया जा रहा है। सामूहिक जुटाव पर प्रतिबंध लगाया जा रहा है। 1897 का महामारी रोकथाम अधिनियम, 2005 का आपदा प्रबंधन अधिनियम लागू किया जा गया है। भारतीय स्वास्थ्य संगठनों द्वारा इस वायरस के संक्रमण को बढ़ने से रोकने का लगातार प्रयास किया जा रहा है, भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा जनता को लगातार संबोधित किया जा रहा है। इस संकट की घड़ी में कार्य करने वाले पुलिस कर्मियों व स्वास्थ्य कर्मियों के उत्साहवर्धन हेतु ताली व थाली बजाकर धन्यवाद किया गया। देश में एकजुटता के लिए दीपोत्सव आयोजित किया गया। वहीं सरकार की नीतियों को लेकर कुछ विवाद भी देखें गए, विपक्ष द्वारा सरकार पर बिना पूर्व तैयारी के लॉकडाउन करने का आरोप लगाया गया। विशेषज्ञों का अनुमान था कि 21 दिन के लॉकडाउन के बाद भारत में कोरोना के बढ़ते संक्रमण पर काबू कर लिया जाएगा। किन्तु तबलीगी जमात प्रकरण के बाद संक्रमित मामलों में तेजी आई है।

कोरोना संक्रमण की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से प्रभावित हो रही है। ऑटोमोबाइल उद्योग,पर्यटन उद्योग,शेयर बाजार व दवा कंपनियों सहित कई सेक्टर प्रभावित हो रहे हैं। आई. पी.एल., अंडर 17 महिला विश्व कप जैसे बड़े बड़े समारोह भी टाल दिए गए हैं चीन में उत्पादन में आई कमी का असर भारतीय व्यापार पर भी पड़ा है। भारतीय अर्थव्यवस्था को इससे करीब 34.8 करोड़ डॉलर का नुकसान हुआ है। चूंकि इस समय देश में लॉकडाउन है, विनिर्माण उद्योग बंद है,इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक रूप से भविष्य में भी पड़ेगा। संयुक्त राष्ट्र के कांफ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट के अनुसार कोरोनावायरस से प्रभावित दुनिया की 15 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत भी है। अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए भारत सरकार ''कोविड बांड'' लाने पर विचार कर रही है। गांवों में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति हेतु ग्रामीण ई स्टोर लॉन्च किया गया है।

वैश्विक स्तर पर भी कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने हेतु विभिन्न देशों द्वारा कोरोना नीति अपनाई जा रही है। विदेशी यात्राओं पर प्रतिबंध, स्क्रीनिंग, क्वारंटाइन, आइसोलेशन, शट–डाउन, लॉकडाउन आदि को अपनाया जा रहा है। चीन द्वारा कोरोना वायरस से लडने के लिए चिकित्सा सामग्री व उपकरण बेचकर भारी मुनाफा कमाया जा रहा है। चीन ने वैश्विक स्तर पर 4 बिलियन मास्क का निर्यात किया है। चीन ने स्पेन को स्टैंडर्ड मानकों से निम्न दर्जे के चिकित्सकीय सामान की आपूर्ति की, जिसे स्पेन ने वापस लौटा दिया। अमेरिका द्वारा इस महामारी से मुकाबले

हेतु सेना की भूमिका बढ़ाई गई है। वहीं दूसरी ओर कोरोना वायरस को हथियार बनाकर हंगरी मं लोकतंत्र को हटाकर तानाशाही लाई गई। यह आशंका जताई गई कि यह वायरस वुहान शहर के सी फूड मार्केट से फैला है, फिर भी इस मार्केट पर रोक नहीं लगाई गई है। इसकी आलोचना की जा रही है। कोरोना वायरस की टैस्टिंग सेंटर के तौर पर कांगो के क्षेत्र को चुने जाने की भी आलोचना हो रही है।

इस महामारी को भूमंडलीकरण के नकारात्मक प्रभाव के तौर पर देखा जा रहा है। इससे सभी देशों की अर्थव्यवस्था, विमानन क्षत्र, शेयर बाजार, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, आयात–निर्यात भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने इस वायरस के प्रभावस्वरूप विश्व स्तर पर सबसे बड़ी मंदी की आशंका जताई है।

भारतीय नेतृत्व द्वारा दक्षिण एशिया में सशक्त भूमिका निभाते हुए सार्क देशों के नेताओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए बैठक की गई। विशेष कार्यदल के गठन का प्रस्ताव लाया गया। भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा **COVID-19** इमरजेंसी फंड का प्रस्ताव रखा, जिसमें सभी देशों के स्वैच्छिक योगदान पर बल दिया गया। भारत सरकार ने इस फंड के लिए एक करोड़ अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया तथा सार्क के सभी देशों से अपनी कोरोना संबंधी जानकारी साझा की। हालांकि पाकिस्तान द्वारा यहां भी कश्मीर कार्ड खेलने का प्रयास किया गया।

भारत के नेतृत्व में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जी–20 सम्मेलन का आयोजन किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भारत की कोरोना नीति की प्रशंसा की गई। इस आपदा की स्थिति में बदलती वैश्विक राजनीति में भारत ने किसी भी समूह में शामिल होने के बजाय संक्रमण को रोकने हेतु बल दिया है। भारत सरकार संक्रमण को रोकने हेतु अन्य देशों से भी लगातार वार्ता कर रही है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो इस महामारी के परिणामों ने दुनिया को यह सीख दी है कि हथियारों के बजाय चिकित्सा उपकरणों व स्वास्थ्य सेवाओं पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन को अधिक मजबूत किए जाने की जरूरत है, ताकि यह परामर्शकारी संस्था के बजाय निर्णयकारो संस्था के तौर पर उभर कर आए। संकट की इस घड़ी में सभी देशों को परस्पर वैमनस्य भुला कर एकजुट होकर इस महामारी का सामना करना चाहिए।

♦♦♦♦♦

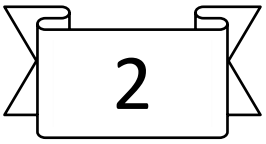

कोरोनाः नीति बनाम राजनीति

डॉ० अर्चना सौशिल्या

सह–आचार्य, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

बीते वर्ष 2019 से कोरोना एक वैश्विक महामारी के रूप में उभर कर आया जिसने पूरे विश्व में तबाही मचा रही है। कोई भी देश ऐसा नहीं जिसने लोगों के साथ मिलने जुलने पर पाबंदी नहीं लगाई हो स्वयं के साथ–साथ मानवजाति को बचाने के क्रम में शहरों का 'लॉकडाउन' करना एक मात्र आपातकालीन सेवाओं को मुहैया करवाना (खाद्य, स्वास्थ्य, सुरक्षा पुलिस), प्रशासन से मुस्तैदी से काम करवाते रहना ही आज सभी देशों की प्राथमिकता बन चुकी हे। भारत भी अपवाद नही है, जहाँ इस बिमारी महामारी की शुरूआत मार्च के महीने से प्रारंभ हो गई और विश्व के बिगड़ते हालात को देखते समझते, जनता कर्फ्यू के बाद पुर्णरूपेण 21 दिन का लाकडाडन घोषित कर दिया गया (25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल 2020)।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जिसे एक संवैधानिक संरचना के तहत राज्य सरकारों के प्रयास तथा आपसी समझौते से चलना पड़ता है परंतु इस वैश्विक महामारी ने विश्वपटल पर हो रहे 'शक्ति संतुलन के सिद्धांत पर जिस तरह प्रश्नचिन्ह् लगा दिया उसी तरह देश के अंदर तमाम 'नीतियों' पर 'राजनीतिक प्रतिक्रियाऐं तथा, राजनीति प्रारंभ हो गई है। इसी 'वाद' प्रतिवादों के बीच संवाद' की चेतना आज जरूरी हो गई है। क्योंकि 100 करोड़ 30 लाख की जनसंख्या वाले देश में अगर मात्र 4800 लोग संक्रमित है जबकि अमेरिका जैसे विकसीत देश में 25,000 तो हमारे देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व दूरदर्शिता तथा विवेकपूर्ण प्रशासन की देन है। विरोधी पक्षो को भी राजनीति से ऊपर उठकर मानवता के संहार को रोकने में सार्थक योगदान देना चाहिए।

भारत सरकार के वित्तमंत्री ने कोविड–19 के महामारी प्रकोप से बचाने हेतु प्रधानमंत्री ग़रीब कल्याण योजना के अंतर्गत 1.7 लोख करोड़ रूपये देने की घोषणा की, जिसके अंतर्गत, आगे तीन महीने तक 5 किलो अतिरिक्त राशन (चावल या आटा), 3 किलो दाल का प्रावधान 80 करोड़ ग़रीबों को मुहया कराया जायेगा। 'जन–धन योजना' के अंतर्गत, 500 रुपये प्रति महिला (20 करोड़), मुफ्त 1 गैस सिलिंडर (8.64 करोड़ रुपये) तथा 1000 रुपये प्रतिवृद्ध व्यक्ति विधवा

एवं दिव्यागों (3 करोड़ लागत) तथा 'मनरेगा' के 5 करोड़ मजदूर परिवारों को 2000 रुपये अधिक वेतनमान को बढ़ाया गया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान नीति में (2020–21) में पहली किस्त 2000 जल्दी ही दे दी जाएगी।

पर प्रश्न यह उठता है कि ग़रीबी रेखा के नीचे रहने वालों को प्रत्यक्षरूप से पैसा कैसे दिया जा सकता है, इसकी सेवा कब और केसे दी जायेगी सरकार इस पर कोई कदम नहीं उठा पाई विदेशों में लोग इस समय लोग भत्ते की माँग कर रहे है – फिर भारत किस प्रकार निम्न, मध्यम वर्गीय उद्यमियों के नुकसान की भरपाई कर पायेगा।

स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं पर भी विरोधी पक्षो ने जमकर आलोचना व राजनीति की है। भारत सरकार ने कोरोना महामारी से लड़ने हेतु, अनेकानेक प्रयास किये हैं। – जैसे : लोगों को क्वारनटाइन करना, सामूहिक जमावड़ों पर पाबंदी सरकारी अस्पतालों में भी कोरोना का टेस्ट करवाना मास्क, सेनिटाइजर तथा कास्ट्युम (PPE) को मुहैया करवाना। अस्पतालों के साथ–साथ, शहर से बाहर खाली स्कूलों, बिल्ड़िंगों, ट्रेन के डिब्बों में भी करोनो के मरीजों को रखने की पूरी व्यवस्था खाने पीने तथा इलाज की व्यवस्था काफी मुस्तैदी से की जा रही है, पूरा प्रशासन, मंत्रालय (गृह, स्वास्थ्य, पलिस) इन्हीं कामों में संलग्न है– परंतु कुछ जनता धर्मप्रचारकों तथा विरोधी दलों की राजनीति ने सरकारी कार्यकालापों तथा जनता के विश्वास को झकझोर कर रख दिया है। इंडिया टूडे ग्रुप की मीडिया रिर्पोटिंग के अनुसार भारत सरकार एवं इनके शासनिक अधिकारी 'कारोना टेस्ट' पर ध्यान नहीं दे रहे और यह आंकड़ा अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। मात्र 32 मिलियन जबकि यह इठली में 8379, स्पेन में 7596, अमेरिका में 3018 ब्रिट्रेन में 2156 एवं चीन में 23.0 मिलियन[1] और लोगों के पास 'मास्क' सैनिटाइजर नहीं है – अतः डॉक्टर मरीजों का इलाज नहीं कर पा रहे है, 50 डाक्टर और अनेक स्वास्थ्यकर्मी कोरोना संक्रमित हो गये हैं। यह सरकार के अविवेकी अदूदर्शिता का लक्षण है – जो अराजक परिस्थितियाँ पैदा कर सकता है। भारत सरकार राज्यों को मेडिकल संसाधनों को मुहैया कराने में भी असमर्थ हो रही है। बिहार सरकार द्वारा मांगे गये संसाधनों में पी.पी.ई. (50,000 के बदले 4000) छ95 मास्क (1 लाख के बदले 50,000), त्छ। टेस्टिंग कीट (10,000 के बदले 250) तथा एक भी वेंटीलेटर नहीं दे पाई।[2]

[1] Govt Health Departmens, Media Report, India Today Group, 1st April, 2020
[2] http://hindi:news18.com/hms/bihar

लॉक्डाउन के फैसले पर भी राजनीति गरम हो गई है कि सरकार ने यह निर्णय लेने से पहले ना तो कोई तैयारी की, ना ही प्रांतों के राज्य–सरकारों से सलाह मशवरा जिसके कारण गलत अफवाहे फैली लोग अपने कार्यस्थल को छोड़ कर अपने घरों को वापस जाने लगे और लाखों का जमावड़ा दिल्ली के बार्डर पर हो गया जिसमें कुछ लोगों की मृत्यु हो गई और कितने मजदूर सड़कों पर बिना राशन पानी के घूम रहे हैं। भारत सरकार तथा राज्य सरकार ने इन ग़रीबों के लिए भरसर कदम उठाये, अतिरिक्त राशन दिया जा रहा है, 'अन्तोदय कार्ड़ वालों' को भी राशन मिला पर कोटेदारों ने ज्यादा दामों पर राशन बेचे क्योंकि उन्हें राशन देने वाले मुनाफा कमा रहे हैं।

पर प्रश्न उठता है क्या इस अराजक परिस्थिति के लिए सरकार और सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार है। सरकार के पास ध्च्च्ब्ध की धारायें हैं, राष्ट्रिय सुरक्षा कानून (छ्ैण ।ण) तथा च्तमअमदजपअम क्मजमदेपवद ।बज भी है – जिसका वह समय आने पर बखूबी इस्तेमाल कर सकती है। 'लॉक्डाउन' के समय में 'रामलला' के कार्यक्रम को सीमित कर दिया गया परंतु 'तब्लीग़ीजमात' ने 3500 लोगों का जमावड़ा करके कोरोना मरीजों की संख्या में बहुत बढ़ोत्तरी कर दी। उनका धर्मगुरु फरार हो गया। इस धार्मिक जमात में 'विश्व का नेतृत्व करने की चाह रखने वाले चीन के भी सदस्य थे जिन्होंने भारतीय को संक्रमित किया और अपने देश वापस चले गये। टूरिस्टवीजा का गलत इस्तेमाल करके देश के अन्तर्गत धार्मिक गतिविधियों में भाग लेना, 'धर्म के उन्माद' में चंद लोगों द्वारा अपने ही देश के करोड़ों लोगों के जान को दांव पर लगाने पर सरकार की सख्ती आलोचना क्या राजनीति क लायक हे।

विरोधी पक्ष कैसे भूल सकता है भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है और 'कोरोना किसी सरहद, किसी जाति किसी धर्म, किसी लिंग को नहीं मानता, और ऐसे में सरकार का उठाया हर–कदम सराहनीय है – जो मानवजाति हिंदू मुस्लिम सबके लिए है। आज अगर ध्च्च्ब्ध की धारा नेशनल सैक्यूरिटी एक्ट, राष्ट्रीय आपदा कानून या आतंकवादी कानून लगाये जाते हैं तो वह हर भारतीय को मान्य होना चाहिए और धार्मिक गुरुओं तथा प्रवर्त्तकों को इसे सांप्रदायिक्ता का नाम देकर, विरोधी पक्षों को अपनी रोटी सैकने का अधिकार नहीं देना है। यह लड़ाइ जीवन बचाने के लिए है जब जीवित ही नहीं रहेंगे तो कैसा धर्म कैसी नीति और कैसी राजनीति?

कुछ 'जमाती लोगों' की वजह से आज हिन्दुस्तासन का हर मासूम हिंदू मुस्लिम मौत के दरवाजे पर खड़ा होता जा रहा है। निज़ामुद्दीन के मरक़ज़ के मुद्दे ने भारत में कोरोना पीड़ितों की संख्या दुगुनी तिगुनी कर दी है।

आज जरूरी है सरकार अफवाह फैलाने वाले व्हाट्स अप सूचनाओं को नियंत्रित करे, गलत, भ्रामक सूचनाओं को प्रसारित करने पर थ्ण्ण्त्ण् दर्ज करे ताकि जनता संयमित रहे परंत विरोधीपक्ष इस नियंत्रण में भी साजिश देख रहा है कि इसे नियंत्रण करके सरकार अपनी कमियों को छुपाने की कोशिश कर रहा हे। आज सूचनाओं की भरमार है कमी दोशारोपण दिल्ली सरकार पर तो कभी उत्तर प्रदेश की सरकार पर, कभी मोदी जी के दिया जलाने पर तो कभी थाली पीटने पर कभी खाने की डिलीवरी पर तो कभी नर्सों पर लंगिक व अभद्र व्यवहार पर किन–किन बातों में 'राजनीति' ही दिखाते रहेंगे? ये वाइरल होते वीड़ियों बिना किसी आंकड़े के बिना किसी तर्क के लोगों में आक्रोश जगाते है सरकार सब कुछ जानती है और प्रयास भी वही करती है उन्हें सूचना देने के लिए 'मीडिया' है – सरकारी प्रशासनिक अधिकारी हमसे कहीं ज्यादा 'सतर्क' व समीक्षात्मक हैं जो 'पक्ष–विपक्ष' दोनों पहलुओं से अवगत हैं। बोलने की स्वतंत्रता एवं वीड़ियो की तथ्यता जानने से पहले भ्रामक धारणा पैदा कराने से रोकना, निःसंदेह सरकारी गतिविधियो को छुपाना नहीं है अगर मुख्यमंत्री के नाम 10 प्रश्न है तो प्रधानमंत्री के पास 20 प्रश्न, सभी एक दूसरे के संपर्क सूत्र में हैं – और संधात्मक व्यवस्था के अंतर्गत सभी निर्णय सर्वसम्मति से लिये जा रहे हैं।– जरूरतों के अनुसार राज्यों को सेवायें दी जा रही हैं। राज्य की सरकारें भी न भूले, केरल राज्य ने सर्वप्रथम 'लॉकडाउन' किया था और किसी भी राज्य में आपदा होने पर केंद्र सरकार ही उसे सर्वोपरि प्राथमिकता देकर भारतीयों के जीवन की रक्षा करेगी, क्योंकि, 'भारत' के लोग' किसी एक प्रांत के नहीं अपितु पूरे भारत के नागरिक हैं जब दिल्ली सरकार पर 300 बसों में मजदूरों को डालकर दिल्ली शहर से बाहर भेजने की 'अफवाह' उड़ाई गई, दिल्ली सरकार एवं भारत सरकार दोनों ने ही मिकर उस समस्या का समाधान किया, रातो रात इनके लिए कैंप बनायें गये खाने पीने का इंतजाम किया। अतः ऐसे अफवाहों से समाज को बचना होगा।

जिस प्रकार चीन ने 'वुहानशहर' को लॉक्डाउन करके अपने अन्य राज्यों को संक्रमित होने से बचा लिया उसी प्रकार भारत ने भी समस्या की गंभीरता को पुर्वाअनुभूति से समझ कर तत्काल 'लॉक्डाउन' की घोषणा कर दी, ना कि केंद्र सरकार की मनमानी दिखाते हुए, जिसे विरोधी पक्ष एक मुद्दा बना कर राज्यों की सरकारों को गुमराह कर रहे हैं। भारत जिसकी आबादी 100 करोड़ 30 लाख है, एवं सवास्थ्य संसाधनों में 112वे नम्बर पर किसी भी हालात में इस महामारी का सामना करने में पूर्णतया असमर्थ है। क्या भारत स्पेन, इटली की गलती दुहरा सकता था, अपनी असमर्थता को जानता भारत ने पहले ही 'सामाजिक दूरी', लॉकडाउन की घोषण करके खुद को बचा लिया पर तब्लीग़ीजमात ने बात नहीं मानी और नतीजा सामने है। क्या भारत की दलीय

प्रवृति जो समझौते, सलाह पर चलती है – उसे चीन के कम्यूनिस्ट पार्टी की राह पर चलकर लोगों से अपनी बात मनवाले पर मजबूर करना चाहिए? विपक्ष के पास सभी प्रश्नों के जवाब हैं पर विपक्ष मौन है।

आज देश साक्षी है कि सारी कमजोरियों के बावजूद हमारी सारी नीतियों को लोग कल्याणकारी, राज्य धर्मनिरपेक्ष भारत, संघीय व्यवस्था के अनुरूप ही लागू किया गया है। यह जानते हुए भी हम विकसीत राष्ट्रों की तुलना में आधुनिक संसाधनों से युक्त नहीं हैं और अगर यह महामारी फैल गई तो हम 21 दिन का लॉकडाउन झेलने के बजाए 21 साल पीछे चले जायेंगे। एक सदी पश्चात् सन् 1918 में 'स्पेन फलू' के बाद विश्व ऐसे वैश्विक महामारी से गुजर रहा है, जिसमें 'तत्तकालिक निर्णय' लेकर संभावनाओं को 'असंभव' करना ही नेतृत्व की मांग बन गई थी। यह एक कठिन 'नेतृत्व' था जिसमें मानवीय वेदनाये होनी थी, पर जीवन को बचाने के लिए कठोर निर्णय लेना था। सरकार, विपक्ष सभी को अहसास हो चला था कि लॉक्डाउन के कारण अर्थव्यवस्था डूबने वाली है, जिसे संभालने में वर्षों लग जायेंगे, पर आने वाले विकराल मौत के सामने भारत विकसीत राष्ट्रो – अमेरिका एवं यूरोप की गलतियों को दुहरा नहीं सकता था, जिन्होंने निर्णय लेने में बहुत देर कर दी एवं मौतों की संख्या बढ़ने लगी। आज इस मानव त्रासदी के दौर में सभी वर्गों, सभी धर्मों, सभी राज्यों के सरकारों, सभी विपक्षी दलों को सामने आकर अपनी सूझबूझ, सहनशक्ति एवं सख्ती संवेदना का परिचय देना होगा, सिविल समाज के दावेदारों एवं सभी संस्थाओं, पुलिस स्वास्थ्यक्रमियों के सहयोग के बिना भारतीय मानव जीवन को बचाना मुश्किल एवं असंभव हो जायेगा।

♦♦♦♦♦

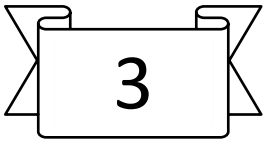

3

कोरोनाः नीति बनाव राजनीति

नवीन कुमार

राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विश्व एक अदृश्य शक्ति से लड़ रहा है। जिसको विश्व स्वास्थ्य संगठन वैश्विक महामारी घोषित किया है। इस महामारी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नॉवेल कोविड–19 (कोरोना संक्रमण) का नाम दिया है। कोविड–19 इस लिए कहा गया क्योंकि इस संक्रमण से प्रभावित होने वाला पहला व्यक्ति 31 दिसम्बर, 2019 चीन में दिखा। इसलिए, इस संक्रमण को नॉवेल कोविड–19 का नाम दिया गया। वही भारत में इस संक्रमण का पहला मामला 30 जनवरी, 2020 को आया। इस आलेख के लिखे जाने तक विश्व भर में इस महामारी के चपेट में आने वाले लोगों की संख्या लगभग 19 लाख थी। अभो तक इस महामारी से लगभग 1.17 लाख लोगों की जान जा चुकी है। और ऐसी बात भी नहीं है कि इस महामारी से लोग ठीक भी नहीं हुए। अभी तक लगभग 4. 50 लाख लोग इस महामारी के चपेट में आने के बाद भी ठीक हो चुके है। और अपने घर पर आराम कर रहे है। यह एक ऐसो महामारी है जिसके चपेट में विश्व के अधिकतर देश आ चुके है। इस महामारी से अभी तक बड़े स्तर पर प्रभावित देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली, स्पेन, जर्मनी और चीन रहा है।

वही अगर, हम भारत की बात करें तो यह आलेख लिखे जाने तक कुल 9,352 प्रभावित लोग थे। वहीं इस महामारी से जान गवाने वाले लोगों की संख्या करीब 352 थे। हम इस आलेख में भारत में कोरोना संक्रमण को लेकर हुए राजनीति और इसको लेकर बने नीति की बात करेंगे। अगर, हम भारत में कोरोना को लेकर बने नीति की बात करे तो, हमें यह लगता है कि भारत में इस महामारी को लेकर भारतीय सरकार समय से पहले सचेत नहीं हुई। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार को लंबे समय के लिए देश में लोकडॉउन(भारत बंद) का निर्णय लेना पड़ा। जिसका, परिणाम भारत के अर्थव्यवस्था पर बुरा पड़ने वाला है। जिस तत्परता के साथ भारत सरकार ने मार्च महीने में इस संक्रमण को रोकने के लिए कदम उठाया, शायद यह कदम फरवरी में उठा लिया जाता तो इस संक्रमण से भारत कम प्रभावित होता। पर यह आलेख लिखे जाने तक कोरोना संक्रमण की स्थिति भारत में भयावह है। भारत में कोरोना को लेकर पहला

मामला जनवरी में आता है। उसके बाद भारत सरकार ने चीन से आने वाले यात्रियों पर पाबंदी लगा दिया। भारत सरकार ने अभी तक इस संक्रमण को रोकने के लिए कई स्तर पर काम कर रही है। चाहे वह आर्थिक स्तर हो या सामाजिक स्तर। भारत सरकार के साथ–साथ राज्यों की सरकारों ने भी इस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए अपने स्तर और कई कदम उठा रही है। भारत सरकार ने इस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए उठाये गए कदम लोकडॉउन के वजह से कई मोर्चें आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर नुकसान पहुंचा है। जिसको पूरा करने के लिए भारत सरकार ने 1.75 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा किया है। इसके अलावा, राज्यों की सरकारों ने भी अपने स्तर पर वहां के लोगों को राहत देने के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई है। जैसे, दिल्ली सरकार ने असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले मजदूरों के लिए 5,000 रुपये की सहायता राशि दे रही है। वही, पंजाब सरकार ने अपने यहां के मजदूरों के लिए 3,000 रुपये की आर्थिक सहायता राशि दे रही है। केरला सरकार ने इस महामारी से निजात पाने के लिये 20 हजार करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता राशि की घोषणा किया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी अपने यहां के मजदूर लोगों के लिए 1,000 रुपये की सहायता देनी की बात कही है। मतलब, यह है कि इस बंदी के वजह से प्रभावित होने वाले लोगों को सभी सरकारों ने अपने स्तर पर कुछ न कुछ देने की बात कही है। उसको पूरा भी कर रही है। इसके अलावा, कई राज्यों की सरकारों ने अपने यहां के राशनकार्डधारी परिवारों को एक महीने के राशन पहले वितरण कर रही है। जो कि रोजमर्रा की कमाई पर अपना जीवनयापन कर रहे थे, उनके लिए यह अच्छा है। क्योंकि, इस बंदी से सबसे ज्यादा यही लोग प्रभावित हो रहे है। इसके अलावा, कई राज्यों के सरकारों ने राशन के साथ– साथ कुछ रुपये भी दे रही है। दिल्ली सरकार ने उन लोगों को भी राशन दे रही है। जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। इस समय में सरकारों की एक कल्याणकारी रूप नजर आ रहा है। अगर, भारत सरकार की बात करें तो भारत सरकार ने अपने आर्थिक पैकेज में उन किसानों को 2,000 पहले भेज रही है। जिनका नाम प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना में हैं। इसके अलावा, भारत सरकार ने भी अपने स्तर पर ऐसे कई निर्णय लिये है। जिसका जिक्र किया जा सकता है।

अगर, हम बात इसको लेकर हुए राजनीति की करें तो, कई स्तर पर भारत सरकार की आलोचना की जा रही है। इसमें से कुछ आलोचनाओं की हम बात करेंगे। भारत में कोरोना का पहला मामला 30 जनवरी को दिखा। उसके बाद 12 फरवरी को कांग्रेस पार्टी के एक सांसद राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर ट्वीट करके भारत सरकार को इस संक्रमण के बचने के लिए सचेत किया। पर भारत सरकार ने राहुल गांधी के बातों को अनदेखा कर दिया। हम जानते है

कि यह महामारी एक अदृश्य शक्ति है। जिसका अभी तक कोई इलाज नहीं मिला है। इसका एक ही तरीका है इस संक्रमण को फैलने से रोकने में, वो है सामाजिक दूरी बनाए रखना। और अपने हाथों को बार–बार साबुन से धोते रहना। पर, भारतीय प्रधानमंत्री ने लोगों को घर के बालकनी में आके डॉक्टरों को धन्यवाद कहने के लिए थाली पीटने को बोला, लोगों ने सड़कों पर आके एक साथ थाली पीटा। जिसकी आलोचना प्रधानमंत्री को सहना पड़ा। दूसरी बार मोदी जी ने लोगों को घर के बालकनी से लाइट बन्द करके मोमबत्ती जलाने के लिए, बोले तो उन्हीं के पार्टी के हैदराबाद के एक विधायक सड़कों पर उतर के मसाल जलाने लगे। इसके अलावा, केंद्र सरकार में एक मंत्री है उन्होंने तो कोरोना को चले जाने का नारा दिया। जिसकी आलोचना विपक्षी पार्टियों ने किया। इसके अलावा, इस पर राजनीति अपने चरमोत्कर्ष पर तब आया जब निजामुद्दीन दरगाह में हुए एक जमात में शामिल लोगों की मृत्यु कोरोना संक्रमण से हुई। तब से इस संक्रमण को एक सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश किया गया। और एक खाश समुदाय को इस संक्रमण के फैलने का जिम्मेदार ठहराया गया। भारत में कोरोना इटली से आये लोगों के कारण फैला है। इसके अलावा, इस महामारी को लेकर हुए राजनीति भारत सरकार की स्वास्थ्य स्तर नाकामी भी एक प्रमुख कारण है। दुनिया के डॉक्टर जब वेंटिलेटर की मांग कर रहे है। तब भारत में लोगों को थाली, मोमबत्ती जलाने के लिए बोला जा रहा है। बिल्कुल, इस महामारी से लड़ रहे हमारे डॉक्टरों को धन्यवाद कहना चाहिए। पर डॉक्टर जब खुद बोल रहे है कि हमें इस महामारी से लड़ने के जरूरी सामान नहीं मिल रहा है। वो अपनी जान जोखिम में डाल के इस महामारी में भगवान का काम कर रहे है। उनको थाली और मोबाबत्ती नहीं बचा सकता है। उनको पीपीई चाहिए, मास्क चाहिए। जब दुनिया वेंटिलेटर– वेंटिलेटर चिल्ला रहा है। भारत सरकार इसको लेकर क्या कर रही है? हम सब ने देखा है।

अंत में, हम यह कह सकते है कि इस महामारी को फैलने से रोकने में भारत सरकार देर से ही सही पर कुछ कदम उठाए है। अभी और कदम उठाने की जरूरत है। जैसे, डॉक्टरों को पीपीई, मास्क, टेस्ट किट और वेंटिलेटर बड़े स्तर पर चाहिए।

♦♦♦♦♦

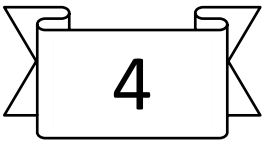

कोरोना वायरसः नीति एवं राजनीति का महत्व और भूमिका

जसदीप कौर

शोधार्थी, अफ्रीकी अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

आज प्री दुनिया को कोरोना वायरस (कोविड–19) के रूप में एक अभूतपूर्व संकट का सामना करना पड़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने भी कोरोना वायरस को महामारी घोषित किया है। देश–राज्यों की सीमाओं को पार करते हुए, इस तेजी से फैलते वायरस ने कई महाद्वीपों में लाखों लोगों के जीवन को खतरे में डाल दिया है। इस वायरस के कारण होने वाले संकट ने साबित कर दिया है कि चिकित्सा विज्ञान के लंबे दावों के बावजूद वैश्विक समुदाय असहाय हो सकता है। दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह, भारत भी इस स्थिति का सामना कर रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, भारत में समाज में सामुदायिक प्रसारण से बचने के लिए लॉकडाउन किया जा रहा है।

नीति निर्माण और पथ सुधार करना इस कठिन समय में आसान काम नहीं है, क्योंकि ऐसे निर्णय किसी देश के सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों से भी प्रभावित होते है। जैसा कि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा, कोरोनावायरस से लड़ने के भारत के प्रयास की चीन के साथ तुलना नहीं की जा सकती है क्योंकि चीन के पास एक ''सैन्य प्रणाली'' है जो लोगों को सामाजिक दूरियां बनायें रखने के आदेशों का पालन करने के लिए मजबूर कर सकती है। जब चीन कहता है कि रिपोर्ट न करें, मीडिया द्वारा कुछ भी नहीं बताया गया है। जब चीन यह कहता है कि कार्यालय में उपस्थित न हों,तो कोई भी उपस्थिति नहीं करता है। यदि चीन कहता है कि घर पर आपको रहना है, तो वहां के लोग सख्ती से आदेशों का पालन करते हैं। भारत ने 22 मार्च को ''जनता कर्फ्यू'' का विकल्प चुना, जिसमें नागरिकों को बीमारी के प्रसार को रोकने के प्रयास में एक दिन के लिए घर पर रहने का अनुरोध किया गया था, जो बाद में भारत के लॉकडाउन के रूप में बढ़ गया ।

इस दौरान कुछ ऐसे भारतीय भी थे जिन्होंने शायद स्थिति की गंभीरता को नहीं समझा और चीनी लोगों के विपरीत लॉकडाउन को पूरी तरह से सफल बनाने में मदद नहीं की। इसका एक उदाहरण दिल्ली में तब्लीगी जमात का होना था। इसी तरह दुनिया भर में देखा जा रहा है इस

संकट से निपटने के लिए, विभिन्न देशां की अलग अलग सांस्कृतिक और राजनीतिक विचारधारा, उनके तरीके को प्रभावित कर रही है। सामुदायिक प्रसार से बचने के लिए, स्पेन, इटली और फ्रांस जैसी सरकारों ने सामाजिक भेद सुनिश्चित करने के लिए कठोर जुर्माना की धमकी दी, जबकि ब्रिटेन ने व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया। भारत में कुछ ऐसा ही देखने को मिला जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को 'थाली बजाओ' और 'दीया जलाओ' अपील के माध्यम से एकजुट किया। कुछ लोगों ने इस पहल को बचकाना स्टंट माना ,लेकिन कई लोगों ने इस कार्य को सराहा क्योंकि वे इसे भारतोय रिवाजों का एक हिस्सा मानते हैं – जो समाज को न सिर्फ जोड़ता है, बल्कि मनोबल भी बढ़ाता है। इन सभी कार्यों में जो सुखद था वह यह था कि देश भर में लाखों लोगों ने प्रधानमंत्री की अपील का पालन किया। इस तथ्य के बावजूद कि भारतीय विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं में विश्वास करते हैं, एक विचार जो हमें एक साथ बांधता है वह हमारी सांस्कृतिक और भावनात्मक एकजुटता है, जो मानवता को किसी भी राजनीतिक नीतियों और इरादों से ऊपर रखती है।

यह कहना सही नहीं है कि भारत में लॉकडाउन बहुत ही सरल और आसान था। 1.3 बिलियन लोगों को लॉक करना आसान नहीं है, लेकिन निस्संदेह इस स्थिति को केंद्रीय हस्तक्षेप की आवश्यकता थी । उदाहरण के लिए, इटली में, जब देश के उत्तरी भाग में एक सीमित लॉकडाउन की घोषणा की गई, तो दक्षिण की ओर जाने के लिए लोगों की भारी भीड़ उमड पड़ी। ऐसी स्थिति से बचने के लिए प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रीय लॉकडाउन की घोषणा की गई। लेकिन इस कार्रवाई के समय, दैनिक श्रमिकों को किसी भी तरह से आश्वस्त नहीं किया गया था। परिणामस्वरूप, अनगिनत लोगों का उनके घर और गांवों की ओर पलायन देखा गया। इसके बाद केंद्र का यह निर्णय जो राज्यों के परामर्श के बिना लिया गया था,सवालों के घेरे में आ गया। विभिन्न राज्यों में शासन करने वाले राजनीतिक दलों ने इसकी आलोचना की। इसी तरह विभिन्न मुद्दे जैसे – केंद्र वायरस परीक्षण नीतियों को कैसे निर्धारित और विनियमित कर रहा है, राज्यों और जनता को महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करने में इसकी विफलता, जिस तरह से केंद्र परीक्षण किट वितरित कर रहा है, उसके धन का प्रबंधन – सभी आलोचना का विषय बने । लेकिन क्या आलोचना और सवाल करना जरूरी था? शायद जवाब हाँ और नहीं दोनों है। संकट के इस समय मे आवश्यक है – स्वस्थ राजनीतिकरण।

भारत ने शायद कभी भी इस तरह की चुनौती का सामना नहीं किया है, जो प्रत्येक राज्य, प्रत्येक आर्थिक क्षेत्र, प्रत्येक संगठन, प्रत्येक व्यवसाय और प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित कर रही है।

इस तरह की चुनौती का सामना करने के लिए राजनीतिक एकता होना भी जरूरी है । लेकिन भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारी अनेकता में ही हमारी एकता है। नागरिकों और राजनीतिक दलों के बीच मतभेद हैं और रहेंगे । कोरोनावायरस की हैंडलिंग पर भी, विपक्ष ने सरकार की प्रारंभिक प्रतिक्रिया, वर्तमान रणनीतियों और प्रोटोकॉल को लागू करने पर सवाल उठाया और उठाना भी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से ऐसे दृष्टिकोण सामने आते हैं जिन्हें शायद सरकार द्वारा अनदेखा कीया जा सकता है। सरकार को भी नागरिकों के प्रति और संसदीय विपक्ष के प्रति जवाबदेह रहना बिलकुल जरूरी है। यह जवाबदेही और रचनात्मक आलोचना ही है जो सरकार को सतर्क रखती है। नेतृत्व करना केंद्र का कर्तव्य है, लेकिन देश के लोगों की सुरक्षा के लिए सभी राजनीतिक दलों को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। केरल में, मुख्यमंत्री और विपक्ष के नेता, दोनों ने एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से, स्थानीय संस्थानों को संकट और आवश्यक उपायों के बारे में संबोधित किया। यह तरीका केंद्र द्वारा भी दोहराया गया और पीएम मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से बातचीत की, जहां विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने प्रतिक्रिया दी, उपाय सुझाए और आगे की राह पर चर्चा की। नेताओं ने उनके द्वारा समय पर किए गए उपायों के लिए प्रधानमंत्री की सराहना की। उन्होंने कहा कि पूरा देश संकट के समय उनके साथ एकजुट है।

हर संकट भविष्य क लिए कुछ सबक और चुनौतियाँ दोनों साथ लाता है। कोरोना वायरस और दुनिया में इसके तेजी से प्रसार ने भी मानवता को कुछ सबक दिए हैं। इसने सभी को सिखाया है कि कोई भी राष्ट्रीय सीमा इस वायरस के प्रवेश से बचने के लिए सक्षम नहीं है और आज कोई भी देश इस वैश्विक महामारी से अकेले लड़ने के लिए आत्मनिर्भर नहीं है। इसलिए इस घातक वायरस पर लड़ाई जीतने के लिए एक–दूसरे का साथ देना और समर्थन करना आवश्यक है। यही कारण है कि दुनिया भर के देश एक–दूसरे की मदद करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और पेरासिटामोल का निर्यात भारत द्वारा अमेरिका और अन्य देशों में किया जा रहा है। इसी तरह चीन व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) किट प्रदान करके मदद कर रहा है। दुनिया भर में सहयोग प्रदान किया जा रहा है और वायरस के प्रसार को रोकने के लिए यह आवश्यक है ताकि हम इस लड़ाई को जीतें और मानवता बनी रहे।

इस प्रकार आज यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम इस कठिन समय में साथ मिलकर काम करें ताकि मानवीय और आर्थिक नुकसान की कुछ हद तक भरपाई हो सके। महामारी को हराने के प्रयास में सभी को मदद करनी चाहिए । यह समय हमें यह भी सिखाता

है कि हमें चेतावनो प्रणालियों को विकसित करने के माध्यम से सतर्क होकर भविष्य के किसी भी संकट के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। इसीलिए सरकार को इस संबंध में भी इस तरह की नीति पर विचार और काम करना चाहिए। इसके अलावा इस स्थिति ने 'टेक्नोलॉजी' और 'डिजिटलाइजेशन' के उपयोग और लाभ को हर क्षेत्र में सामने लाकर रखा है य जिसकी वजह से भविष्य में बहुत सारे बदलाव देखने को मिलेंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह सब काम सकारात्मक रूप से होता है, विभिन्न नीतियों और राजनीतिक विचारों वाले विभिन्न लोगों को एक साथ काम करने की आवश्यकता है ताकि हम भविष्य में किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना कर सकें।

♦♦♦♦♦

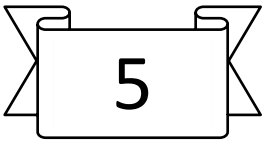

सबका साथ कोरोना को मात

डॉ. हितेन्द्र बारगल

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, (म.प्र.)

विनोद कुमार पटेल

भारतीय प्रबंध संस्थान, इन्दौर, (म.प्र.)

कोरोना विषाणु के संक्रमण को फैलने और संक्रमितों के सम्पूर्ण उपचार के लिए भारत सरकार ने संपूर्ण देश में बंदी जैसे कड़े फैसले लिए जिसका स्वागत सम्पूर्ण राज्य की सरकारों के साथ प्रे देश के लोगो ने भी किया। जहा पूरा देश इस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए सरकार के फैसले को अमल में लेने की कोशिश कर रहा था वहीं कुछ लोग ऐसे भी थे जो मानो ये सोच कर ही बैठे थे क हम इसको सफल नहीं होने देंगे। दरअसल पूर्ण पाबन्दी की घोषणा के बाद कई जगह पर लोगो की मनमानी देखीं गयी एवं सामाजिक दुरी बनाये रखने के आह्वान को ठेंगा दिखाया गया।

कई जगह लोगो ने सामूहिक प्रार्थना सभा का आयोजन किया तो कई जगह लोग समूहों में इकट्ठा होकर प्रशासन के आह्वान को हवा में उड़ाते दिखे। देश व्यापी बंदी के बावजूद लाखो की संख्या में लोग पैदल ही अपने पैतृक घर की ओर जाते दिखे जिसने प्रशासन की व्यवस्था की पोल खोल दी। लाखो लोगो की भीड़ में कोरोना के संकरण की आंशका को और बल दिया और जिसमे कुछ लोग वो भी थे जो पैदल ही अपन गांव तक पहुंचने को आतुर थे। अगर इनमे से कोई संक्रमित व्यक्ति अपने गांव तक पहुंच जाये और उससे संक्रमण और लोगो को हो जाये तो स्थिति और भयावह हो सकती थी।

इससे लोग भयभीत तो थे ही इतने में तब्लीगी जमात के लोगो ने मानो जैसे आग में घी डाल का काम कर दिया। इनमे से कुछ लोग धर्म प्राचार में लगे थे कुछ लोग अपने घरो में पहुंचे, लोगो से मिले और जिससे संक्रमण का दायरा और फैलने लगा और देखते ही देखते तब्लीगी जमात के लोगो और कोरोना संक्रमण ने मिल कर जंगल में आग जैसा काम किया और संक्रमण और तेजी से फैलने लगा। ऐसी लापरवाही और मनमानी के चलते पैदा हो गए खतरों

के मुद्देनजर सरकार से चौकसी की अपेक्षा और प्रबल हो गयी। इन सब में अच्छी बात यह रही की सभी राज्य सरकारों ने अपने एकजुटता दिखाते हुए अपने–अपने स्तर पर सक्रियता दिखाई और इस समस्या से पार पाने के लिए हर जरूरी कदम उठाए।

इसी कड़ी में उत्तरप्रदेश सरकार ने दिल्ली सरकार के साथ मिलकर प्रवासी मजदूरों को उनके गंतव्य तक पहुचाने के लिए वाहनों का इंतजाम किया जिससे उनके साथ–साथ और लोगो को परेशानी का सामना न करना पड़े। इस बीच जहा सारा सरकारी महकमा स्वयंसेवी संघठन प्रशासनिक सेवा से जुड़े हुए लोग डॉक्टर्स, व स्वास्थकर्मी लोगो से सहयोग की उम्मीद कर रहे है वही कुछ लोग इन पर पथराव व इनसे उलझ रहे है इनमे से कुछ तब्लीगी जमात के लोगो ने ना केवल असहयोग किया अपितु स्वास्थकर्मियो पर थूकने तक की शिकायत मिली जिससे इन लोगो को अलग–अलग स्थानांतरित किया गया।

इस वक्त संक्रमण को फैलने से रोकना बड़ी चुनौती है। उसमे तेजी से जाँच और उपचार उपलब्ध कराना प्राथमिकता है। इसके लिए आवश्यक चिकित्सक तैनात करना और प्रचुर मात्रा में जाँच केंद्र स्थापित करना सरकारों के लिए काफी बड़ा काम है। तमाम चिकित्सक दल सलाह दे रहे हे की इस महामारी से घबराने की जरूरत नहीं है और वे हर हाल में सुविधाएं उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध है। इसके लिए वो अपने जीवन की फिक्र ना करते हुए दिन रात जोखिम भरे वातावरण मं काम कर रहे है।

कई चिकित्सक खुद संकर्मित हो चुके है और उनके जरिये उनके परिजन भी इस विषाणु के चपेट में आ चुके है। इसलिए उनके योगदान को सराहना और उनके मनोबल को बढ़ाना ही सरकार एवं नागरिको का प्रथम लक्ष्य होना चाहिये और अगर कुछ लोग उनके साथ बदसलुकी करते हुए दिखे तो उनकी निंदा भी होनी चाहिये। इसलिए इस दुर्व्यवहार को देखते हुए कुछ राज्य सरकारों ने कठोर कानून भी बनाये है। जिसके तहत ऐसे लोगो पर कठोर कानूनी कार्यवाही की जा सके।

कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रकोप और सम्पूर्ण देशव्यापी बंद के कारण कुछ जमाखोर मुनाफाखोर व कालाबाजारी करने वाले लोग सक्रिय हुए है एवं इस महामारी के दौर में अमानवीय चेहरा अपनाये हुए है। कैसे कुछ लोगो के लिए ये महामारी मुनाफा कमाने का मौका हो सकती है? यह संवेदनहीन और आपराधिक प्रवृत्ति को कैसे कोई मनुष्य अपना सकता है जब पूरी दुनिया इस महामारी से लड़ने में लगी हुई है।

गौरतलब है की कोरोना महामारी से बचाव के लिए मुँह और नाक पर मास्क लगाने और हाथो पर सैनीटाईजर लगाने को प्राथमिक उपाय बताया गया है। जैसे–जैसे सरकार लोगो को जागरूक कर रही है वैसे–वैसे जमाखोर लोग इसकी कृत्रिम कमी दिखाकर इसकी कालाबाजारी में लग गए है। कोरोना वायरस के असर को खौफ के रूप प्रचारित कर लोगो से उस कीमत का दुगना वसूला जा रहा है। इस समय सरकार के सामने न केवल कोरोना वायरस जैसी विकट परिस्थिति है। अपितु उसे कालाबाजारी को भी रोकना है। लोगो तक राशन, दवाई एवं रोजमर्रा की जरूरतों की भी पूर्ति करनी है। लोगो को घरों में रोकना है और लोगो को कोरोना संक्रमण के बारे में शिक्षित भी करना है। इसके लिए ना केवल सरकार को अपितु आम नागरिक को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगो, तब जा कर हम कोरोना सक्रमण को रोकने में सफल होंगे।

♦♦♦♦♦

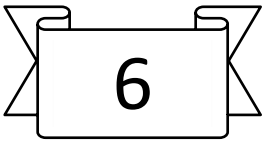

कोरोना महामारी प्रबंधनः नीति एवं राजनीति के मध्य महिलाओं की स्थिति का अध्ययन

काजल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

कोविड–19 महामारी आज सम्पूर्ण विश्व में एक बहुत बड़ी समस्या है जो हर एक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर रही है। परन्तु यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि इस बीमारी ने पहले से उपस्थित आर्थिक व् सामजिक असमानताओं को और बढ़ाया है। वर्तमान समय में हम न केवल एक सार्वजनिक–स्वास्थ्य संकट के दौर में हैं बल्कि हम एक आर्थिक संकट के दौर में भी हैं। हमारे सामान्य जीवन के तीन माह या उससे अधिक निलंबित हो चुके हैं। हालाँकि प्रत्येक देश की सरकारें अपने देश के लोगो के जीवन को सुरक्षित रखने का काफी प्रयास कर रही हैं, परन्तु उपस्थित असमानताओं के चलते बहुत दुःख की बात है कि जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आश्चर्यजनक रूप से इन परिस्थितियों के नकारात्मक प्रभावों की इस चर्चा से अनुपस्थित हैं और वह है महिलाएँ। आश्चर्यजनक बात है कि आज नारीवाद के ध्वजवाहक शांत हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य केवल कुछ प्रसि) मुद्दों पर सरकार की आलोचना करना रह गया है। जिनका कार्य प्रसिद्धः मुद्दों को उजागर कर विपक्ष राजनीति का हिस्सा बनना रह गया है। इस लेख का उद्देश्य वास्तविक परिस्थिति के सन्दर्भ में सरकार की नीतियों का विश्लेषण कर उपस्थित राजनीति को उजागर करना है।

कोरोना महामारी एवं मजदूर नीति के बीच महिलाओं की आर्थिक स्थिति

कोरोना से अधिक बड़ी समस्या घर को चलाने और भुखमरी से लड़ने की है जिनके बोझ के अंदर महिलाएं अधिक हैं। वर्तमान स्थिति के अनुसार विश्व में लगभग 60 प्रतिशत महिलाएँ अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कार्य करती हैं, कम कमाती हैं, कम बचाती हैं। परन्तु आज जब भारत में इतनी अधिक मात्रा में मजदूरों के पलायन का चित्र सामने रखा जाता है तो उस समूह की पहचान पुरुष से की जा रही है, समाचारों में अधिक मात्रा में पुरुष मजदूरों से उनकी समस्याओं के विषय में पूछा जा रहा है जबकि उस समूह की महिलाओं को हमेशा की भांति

अनदेखा कर दिया गया है। जबकि महिलाओं को केवल गरीबी या भुखमरी से नहीं लड़ना है अपितु परिवार एवं बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी से, घरेलु शोषण और स्वास्थ से भी लड़ना है। इस बीमारी में सबसे अधिक महत्वपूण हैं हाथों को शुद्ध पानी एवं साबुन से साफ रखना। परन्तु एक गरीब महिला जो अपने सम्पूर्ण परिवार को खाना बना कर खिलाती है, जिनके पास शु) पेय जल तक नहीं पहुँच पाता उनके हाथ धोने के लिए साफ पानी का होना बहुत कठिन है। सरकार द्वारा दी जा रही आर्थिक सहायता अधिकतम परिवार के पुरुषों के हाथो में जा रही है, जिस पर महिलाओं का कितना अधिकार है यह पता नहीं। कुल मिलाकर मजदूरों के इस पलायन को राजनीति का हिस्सा बनाया गया साथ ही सरकार द्वारा भी आर्थिक सहायता के रूप में धन पहुँचाया गया। परन्तु दोनों ही स्थिति में महिलाओं की उपस्थिति नहीं थी।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति बनाम प्रसिद्द राजनीतिक मुद्दे

वर्तमान समय बहुत से लोग सामाजिक दूरी बनाने और घर से काम करने के बारे में प्रसन्नता से बात करते हुए विलियम शेक्सपियर और आइजैक न्यूटन के सबसे सफल कार्यों की चर्चा कर रहे हैं, परन्तु वह यह भूल गए हैं कि उनमें से किसी के पास भी बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारियां नहीं थी। बिना किसी पारिवारिक उत्तरदायित्व के एक संक्रामक–रोग के प्रकोप के समय में उन्हें किंग लेयर को लिखने या प्रकाशिकी के एक सिद्धांत को विकसित करने का भरपूर समय प्राप्त हुआ। सुरक्षित नौकरियों और नियमित वेतन वाले लोगों के लिए, अस्थायी लॉकडाउन धीमा करने, कायाकल्प करने और उनके रचनात्मक पक्ष पर ध्यान देने का एक अच्छा तरीका हो सकता है। हालांकि, रचनात्मकता को कभी न खत्म होने वाले घरेलू कामों के बोझ तले दबाया जाना उनकी रचनात्मकता को समाप्त करना है।

दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान में, विश्व स्तर पर उच्चतम अनुपात में से एक है, जहाँ पुरुषों के सापेक्ष महिलाओं द्वारा अवैतनिक देखभाल कार्य पर अधिक समय दिया जाता है। लॉक डाउन से सभी परिवारों के लिए घरेलू काम का बोझ बढ़ जाता है। भारत में, उच्च वर्गीय और मध्यम वर्गीय परिवारों का दैनिक जीवन सेवा प्रदाताओं की सेवाओं से ही चलता हैरू घर का काम करने वाली सहायक, ड्राइवर, माली, धोबी, कचरा बीनने वाले, छोटे विक्रेता जो घर के दरवाजे पर आवश्यक सामान लाते हैं। अब यह पूरी व्यवस्था बाधित हो गयी है। आज जबकि पुरुष और महिलाएं दोनों घर में फंसे हुए हैं, प्रश्न यह है कि दोनों में से कौन घरेलू काम के इस उत्तरदायित्व को पूरा कर रहा है, सैद्धांतिक रूप से दोनों, परन्तु व्यवहार में, यह कार्य स्वाभाविक रूप से महिलाओं का सौप दिया जाता है बिना इस बात को सोचे कि वे

नौकरी करती हैं (यानी मजदूरी कमाती हैं) या नहीं। यदि वे करती हैं, तो घरेलू कामों और उनके दिन की नौकरियों का दोहरा बोझ अब कई गुना अधिक है, क्योंकि उनके दिन की नौकरी का अब एक नया नाम हैरू घर से काम (वर्क फ्रॉम होम)।

कोरोना की इस महामारी को रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन का सबसे भयानक और स्पष्ट प्रभाव घरेलू हिंसा में वृ) के रूप में रहा है, जिसको लेकर समाज एवं सरकार अनभिज्ञ है । इतना ही नहीं कोरोना वायरस के चलते सामजिक रूप से दूरी बनाये रखने के इस विचार ने लोगो के मन में विभिन्न समुदायों के प्रति हीन भावना को भी उत्पन्न किया है जिसमे भी महिलाओं को ही अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा है उदाहरणतः भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों की महिलाओं एवं छात्राओं पर चीनी लोगों के साथ समानता के कारण नस्लवादी हमले एवं ष्गो कोरोना ष जैसे वाक्यों का प्रयोग करने की घटनाएँ सामने आयीं हैं। इसके अतिरिक्त किराए के मकान में रह रहीं महिला नर्सों एवं डॉक्टरों तथा विमानो कें जगत में काम कर रही महिलाओं के साथ मकान मालिकों द्वारा दुर्व्यवहार एवं उनके देरी से घर में आने को लेकर उनके चरित्र हनन की शिकायतें भी सामने आयी हैं।

परन्तु आज जब हम इस महामारी के सन्दर्भ में विभिन्न सरकारों के प्रयत्नों एवं मीडिया की भूमिका को देखते हैं तो केवल धार्मिक बहसें या ऐसे मुद्दे देखने को मिलते हैं जिन पर राजनीति करना सरल है, जिनसे राजनीतिक लाभ अधिक मिलते हैं। ऐसी स्थिति में गर्भवती महिलाओं की समस्या या उनके प्रति हो रही हिंसा के विषय में सोचने के लिए किसी के पास समय नहीं या फिर कह लीजिये उनकी आवश्यकताओं पर राजनीति नहीं की जा सकती। ऐसे में सरकार द्वारा बनाई गयी नीति भो सिर्फ नागरिकों के लिए हैं जिसमे वह पुरुष और महिलाओं के लिए एक नीति का निर्माण करते हैं, परन्तु सरकारें यह भूल जाती हैं कि समाज में महिलाओं की स्थिति, उनका जीवन व् उनकी आवश्यकताएँ असमान हैं जिसके चलते उनके लिए अलग नीतियों की आवश्यकता है। एक डॉक्टर क साथ न्यूनतम दो से तीन नर्सें होती हैं जिनका काम हर समय इन मरीजों का ध्यान रखना होता है। ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है परन्तु दुर्भाग्यवश, नीति बनाम राजनीति की इस लड़ाई में महिला न तो नीति का हिस्सा बन पायी और न ही राजनीति का।

♦♦♦♦♦

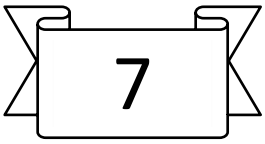

कोरोना संकटः शिक्षा का अंकीयकरण (डिजिटलीकरण)

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

इस समय सम्पूर्ण देश कोरोना वायरस से अपनी पूर्ण शक्ति, सामर्थ्य व साहस से लड़ रहा है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार, सभी निकाय व सभी नागरिक इसके विरुद्ध कार्य कर रहे है। कोरोना के विरुद्ध संघर्ष में भारत सरकार ने जो पहल की है, उसकी सम्पूर्ण विश्व में सराहना हो रही है। वास्तव में सरकार के कदम अन्य देशों के लिए अनुकरणीय व प्रेरित करने वाले है। सर्वप्रथम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की पहल पर सार्क देशों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस महामारी से बचने के उपायों पर विवेचना की थी। सभी देशों ने इस विषय में एक दूसरे को हरसंभव सहायता का आश्वासन भी दिया। प्रधानमंत्री जी ने सार्क देशों के मध्य सहयोग व समर्थन की पहल कर भारत की विश्व बंधुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम पर आधारित चरित्र का परिचय दिया है। इस पहल से सिद्ध होता है कि भारत मात्र अपनी धरती पर कोरोना के विरुद्ध संघर्ष के लिए तत्पर ही नहीं है, अपितु अपने आस–पास के देशों को भी सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में बल दिया कि कोरोना वायरस से डरने की आवश्यकता नहीं है, अपितु सतर्कता, सहजता व सदाचार की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री जी मुख्यमंत्रियों, गृह सचिवों, कैबिनेट सचिवों, स्वास्थ्यकर्मियों, समाजसेवियों, भाजपा पदाधिकारियों, मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों व भारत के विदेशी दूतावासों–उच्चायोगों में कार्यरत राजदूतों से सवांद कर चुके है। किसी में भी निराशा का भाव नहीं देखने को मिलेगा, किन्तु सभी में सहयोग करने, लोगों को जाग्रत करने, कमजोर और वंचितों की सेवा करने आदि के भाव को देखा जा सकता है। 22 मार्च और 5 अप्रैल के कार्यक्रमों में सम्पूर्ण देश की उत्साहजनक सहभागिता ने अद्भुत आशा के चित्रण को उत्पन्न किया है। यह वह शक्ति है जिससे आशा उत्पन्न होती है कि हम विश्व के विकसित देशों से उत्तम स्थिति में होंगे, स्वयं को बचा लेंगे एवं विजय भी पाएंगे।

ऐसे समय में देश के लगभग 40,000 महाविद्यालय, 10,000 विश्वविद्यालय जिसमें लगभग तीन करोड़ से अधिक छात्र व दस लाख से अधिक अध्यापक घर से ही बैठकर कार्य कर रहे है। मानव संसाधन मंत्रालय ने भी प्रधानमंत्री मोदी जी के साथ कदम से कदम मिलते हुए पूर्ण तैयारी कर ली है। देश के छात्रों के स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को ध्यान में रखते हुए "केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड" (CBSE), "राष्ट्रीय मुफ्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान" (NIOS) को भी परीक्षा व परीक्षा मूल्यांकन के स्थगित करने के निर्देश दी गए है। देश भर के शेष विद्यालय व महाविद्यालय को बंद करने के निर्देश दी जा चुके है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रतिस्पर्धी परीक्षाएं भी स्थगित कर दी गई है, क्योंकि इन परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों को दूसरे शहरों में जाना पड़ता। जिससे वायरस के संक्रमण के विस्तार का संकट और बढ़ जाता।

इसके साथ ही "विश्वविद्यालय अनुदान आयोग" (NIOS), "अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद" (AICTI), "नेशनल टेस्टिंग एजेंसी" (NTA) की परीक्षाएं भी अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी गई है। परीक्षा स्थगित होने से छात्रों के मन में यह भय भी हो सकता है कि इससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होगी या सत्र प्रभावित होगा। अतः मंत्रालय की ओर यह सुनिश्चित किया गया है कि ना ही किसी छात्र का कोई सत्र प्रभावित होगा और ना ही किसी को कोई हानि होगी। अपितु मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा अपील की गई है कि मंत्रालय द्वारा पहले से चलाई जा रही कुछ योजनाओं के द्वारा पढ़ाई निरंतर रख सकते है। मानव संसाधन मंत्रालय की ये सभी योजनाएं प्रधानमंत्री मोदी जी की "डिजिटल इंडिया" योजना के साथ जोड़ कर शिक्षा के डिजिटलीकरण को बढ़ावा भी देती है। जो छात्र टी वी देखना अधिक पसंद करते है, उन्हें ध्यान में रखते हुए मंत्रालय ने स्वयंप्रभा नाम से डीटीएच चौनल आरंभ किया है, जिसमें पूरे दिन विद्यालयों द्वारा उच्च शिक्षा हेतु उत्तम पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इस चौनल पर प्रति–दिन चार घंटे का समय कुछ राज्यों को दिया गया है जिसमें वों विद्यालय की शिक्षा से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराएंगे। इस चौनल के माध्यम से छात्रों में स्वयं से अध्ययन करने की जिज्ञासा जागेगी। इस चौनल में शिक्षा से संबंधित सामग्री को ट्यूटोरियल, व्याख्यान व विवेचनाओं के माध्यम से पढ़ाया जाता है।

इसके अतिरिक्त मानव संसाधन मंत्रालय की ई–पाठशाला द्वारा छात्रों व शिक्षकों के लिए पोर्टल के साथ–साथ ऐप के माध्यम से भी शिक्षा सामग्री प्रदान की जा रही है। मानव संसाधन मंत्रालय ने नेशनल रिपॉजिटोरी ऑफ ओपन एजुकेशन रिसोर्स भी आरंभ किया है।, जो एक सहयोगी मंच है जहां विभिन्न भाषाओं में प्राथमिक से तृतीयक स्तर तक बड़ी संख्या में शिक्षा

संसाधन छात्रों तक पहुंचाता है। मंत्रालय ने दीक्षा कार्यक्रम भी आरंभ किया है। यह अध्यापकों के लिए है, जिसकी सहायता से वो अपने शिक्षण कौशल को प्रशिक्षण के माध्यम से और अच्छा कर सकते है। मंत्रालय ने शिक्षण संस्थानों को निर्देश दिए है कि सभी छात्रों और शिक्षकों के साथ नियमित इलेक्ट्रॉनिक संचार बनाए रखें। ऐसा इसलिए कि सभी शिक्षण संस्थानों का प्राथमिक कर्तव्य है कि छात्रों और अभिभावकों के साथ–साथ शिक्षकों को सम्पूर्ण घटनाक्रम के बारे में नियमित रूप से जानकारी देते रहे। विद्यालय व महाविद्यालय को यह भी सुनिश्चित करने को कहा गया कि हेल्पलाइन नंबर या कोई ईमेल आइडी बनाए जिससे कि कोई छात्र, अभिभावक या शिक्षक कोई जानकारी लेना चाहता है तो इस पर संपर्क कर सकता है। परंतु इन सभी के बावजूद भी क्या शिक्षा की इस आधुनिक तकनीक के द्वारा प्राकृतिक शिक्षा जैसे परिणाम प्राप्त होंगे और क्या सभी छात्र व छात्राओं के पास शिक्षा की आधुनिक तकनीक के संसाधन उपलब्ध है। यह एक विचारणीय प्रश्न बना हुआ है।

अंततः कहा जा सकता है कि आधुनिकता की अंधी दौड़ में भी जो लोग प्राकृतिक जीवन के जितना निकट रहते है, वें तथाकथित अधिक स्वस्थ्य व सुखी रहते है तथा अधिक समय तक जीते है। इसलिए तो लगता है कि आज कोरोना "करुणावतार" बनकर आया है। भगवान कृपा करें और इस महामारो पर नियंत्रण पाया जा सके, परंतु यह समय पुनरू अपनी जीवन दृष्टि पर चिंतन करने का है। जितना हम प्रकृति से दूर रहेंगे, उतना ही हमारा जीवन अप्रत्याशित संकटों में रहेगा। इसलिए जब जागो तभी सवेरा।

♦♦♦♦♦

8

कोविडः राजनीति में नव विमर्शों का आह्वान

गरिमा शर्मा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

कोविड संक्रमण आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक ऐसे विमर्श को लेकर आया है जिसने अर्थव्यवस्था, आस्था एवं आजीविका इन सभी केन्द्रीय प्रश्नों के साथ जीवन के महत्व की समीक्षा करने पर बल दिया है इक्कीसवीं शताब्दी में विज्ञान के बल पर मनुष्य ने भूगर्भ से लेकर अंतरिक्ष तक अपने मार्ग का निर्माण तो कर लिया परन्तु वह प्रकृति से अनदेखी करने के परिणाम को इतने व्यापक स्तर पर आंकने में असफल सिद्ध हुआ। इस संक्रमण की उत्पति ने भी इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति के अंतर्गत आरोप –प्रत्यारोप का सिल सिला आरम्भ करने का विषय बना दिया है चीन एवं अमेरिका का एक दूसरे पर आरोपण करना तथा साथ ही विश्व स्वास्थ्य जैसी संस्थाओं के परामर्श के आधार देशों द्वारा अपनी सीमाओं को सीमित कर लेना तथा आंतरिक स्तर पर देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा करने से राज्य के एक नए स्वरुप का उभारना यह सभी एक राजनीति विज्ञान के शोधार्थी को इस नवीन परिदृश्य पर प्रकाश डालने के लिए आकर्षित करते है। इस लेख के माध्यम से उन सभी प्रमुख विमर्शों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो आगामी समय में आने वाले राजनीतिक विमर्शों का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करेंगे।

- सुरक्षा– प्रथम विश्व युद्ध के काल में उत्पन्न हुए स्पेनिश फ्लू की महामारी के पश्चात कोविड संक्रमण को विश्व की सबसे बड़ी महामारी के रूप में देखा जा रहा है। चीन से इसकी उत्पति के सूत्र प्राप्त होने के कारण इसे चीनी संक्रमण के नाम से भी कई जगह संबोधित किया गया, जिस पर चीन द्वारा स्पष्ट रूप से आपत्ति प्रकट की गयी। अमेरिका द्वारा कई वाक्यांशों में इसे चीन द्वारा विश्व स्तर पर अपनी शक्ति में वृद्धि करने हेतु मानव संक्रमण के इस स्वरुप को निर्मित करने का आरोप लगाया गया। वही चीन द्वारा प्रति उत्तर में अमेरिका पर ही इस संक्रमण का चीन में उत्पति का आरोप लगा दिया गया कि चीन के वुहान में सर्वप्रथम इस संक्रमण के लक्षण देखने को मिले जिसे अमेरिका के तीन सौ सैनिकों द्वारा वुहान में सातवें सैन्य विश्व खेल कार्यक्रम में सम्मिलिकरण से जोड़ा जाने लगा। चीन

एवं अमेरिका के इस संकट की घड़ी में चल रहे वाद –विवाद की प्रक्रिया को राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा इक्कीसवीं शताब्दी के शीत युद्ध की संज्ञा भी दी जाने लगी है। इस संक्रमण में विश्व स्तर पर देशों के मध्य सुरक्षा के नए आयाम को प्रस्तुत किया है। जिस कारण देशों द्वारा आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। ऐसी परिस्थिति का वैश्विक समय में सोचना भी कल्पना से परे था। आज देशों के मध्य अपने देश की इस संक्रमण से सुरक्षा करना प्रथम वरीयता बन चूका है। जिस कारण विश्व सहयोग की भावना की परिकल्पना पर भी प्रश्न चिन्ह लगने लगे थे परन्तु भारत द्वारा हाइड्रो क्लोरो क्वीन जैसी दवा के निर्यात से प्रतिबंध हटा कर इस सुरक्षा के विमर्श में भी विश्व सहयोग की ज्योति को पुनः प्रज्वलित कर दिया गया है।

- स्वायत्तता– कोविड संक्रमण एक ऐसी महामारी के रूप में उभर कर आया है जिसने पुनः राज्य के अस्तित्व को सुदृढ़ किया है। वैश्वीकरण के दौर में राष्टोय एवं अंतर्राष्टोय स्तर पर बाजार को एक प्रमुख बल के रूप में देखा जा रहा था जिसने राज्य की सीमाओं को काफी रूपों में सीमित कर दिया था और कई स्तर पर राज्य द्वारा भी अपनी कल्याणकारी क्रियाओं को बाजार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया था। जिस कारण राज्य कई पहलुओं पर पक्षपाती भी अवलोकित हुआ तथा ऐसा माना जाने लगा कि राज्य पूर्ण रूप से स्वायत्त नहीं है वरन इस पर अनेक दवाब समूहों का प्रभाव भी होता है इस संक्रमण के काल में राज्य द्वारा लिए गए निर्णय एवं नीतियाँ एक स्वायत्त कल्याणकारी राज्य के स्वरुप को सामने लेकर आया है जहाँ राज्य से यह अपेक्षा रखी गयी कि एक लम्बे अंतराल के गृह अवकाश का निर्णय लेने के साथ लोगों के व्यवसाय, जीवनयापन एवं स्वास्थ्य से संबंधी सुरक्षा का कार्यभार बाजार की अपेक्षा राज्य पर ही हो और राज्य काफी स्तर तक इस आपूर्ति को करने में सक्षम भी दिख पा रहा है। अन्य गैर दृ सरकारी संस्थानों का भी इस तनाव पूर्ण परिस्थिति में सहयोग सराहनीय है जिन स्तरों तक राज्य की नीतियों का विस्तार नहीं हो पता उन स्तरों पर इनकी राज्य के साथ तारतम्यता एक नव समाज चेतना का उजागर कर रही है परन्तु फिर भी इन्हें बाजार की श्रेणी के अंतर्गत नहीं रखा जाएगा क्योकिं यह तृतीय क्षत्र है जो समाज से ही उभरकर आता है जिसे राज्य के निर्माण के इतिहास में समय–समय पर अवलोकित किया जा सकता है।
- संपोषणीयता– कोविड संक्रमण ने राज्य के समक्ष एक नई समस्या को प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार से लोगों के जीवन और जीवनयापन में एक संतुलन निर्मित किया जा सके भारत जैसे देश में जहाँ बेरोजगारी जैसी समस्या चरम पर हो, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा

भाग दैनिक मजदूरी से अपना भरण पोषण कर रहा हो ऐसे में एक लम्बें काल के लिए उन्हें अपने घरों में जीवन व्यतीत करने के लिए कहना हास्यप्रद प्रतीत होता है बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर शहरों में अपनी रोजी रोटी के लिए आए होते ऐसे में बिना छत के घर में रहने का प्रस्ताव ही एक नए प्रश्न को उजागर करता है। भारत में भुखमरी की समस्या भी अनदेखी नहीं हुई है ऐसे में राज्य किस प्रकार इस बड़े समूह को लोकतांत्रिक रूप से इंगित करे कि "जान भी रहे और जहान" जिसे प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा इस संतुलन को निर्मित करने हेतु निर्मित की गया है।

यह तीन प्रमुख विमर्श मात्र भारत के सन्दर्भ में नहीं वन कोविड संक्रमण से उद्भव परिवेश के कारण राजनीतिक विज्ञान के वर्तमान शोध विमर्श का केंद्र बन चुके है। इस समस्या को विभिन्न देशों की लोकतान्त्रिक व्यवस्था तथा संस्कृति के सन्दर्भ में भी अध्ययन किया जा सकता है। अधिकतर पश्चिमी देशों द्वारा जीवनयापन को जीवन से सर्वोपरि रखा तथा इसके पीछे निर्धन जनसंख्या या भुखमरी जैसी समस्या की अपेक्षा विश्व अर्थव्यवस्था में अपने वर्चस्व को स्थापित करने की अभिलाषा अधिक परिलक्षित हुई। जिसका परिणाम का अनुभव वह कर रहे है। भारत ने इस निर्णय को बड़ी समझदारी से संभालाने का प्रयास किया तथा भारतीय संस्कृति में व्याप्त "सेवा" की भावना इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई है। कोविड संक्रमण ने सामजिक स्तर पर –सेवा, सम्पर्ण एवं सहयोग की संस्कृति को एक बार पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। इस संक्रमण काल में इन विमर्श श्रृंखला में अन्य भाग भी जुड़ने अभी शेष रह सकते है जिनका एक सिद्धांतिक स्वरुप शायद संक्रमण काल के पश्चात स्पष्ट रूप से निर्मित हो सके।

♦♦♦♦♦

9

कोरोना संकट के वैश्विक आयाम

महेश कुमार दीपक

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दयाल सिंह महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

नीति एवं राजनीति उत्तर–प्रबोद्घन काल एवं उदारवादी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में एक दूसरे क पूरक की भूमिका में उभरे हैं। वर्तमान सन्दर्भ में विश्व–स्तर पर एक वैश्विक स्वास्थ संकट के रूप में उभरे कोविड–१६, जिसे कोरोना के नाम से भी विहित किया जा रहा है, ने विभिन्न देशों के समक्ष नीतिगत तथा शासन से सम्बंधित नयो चुनौतियों को उजागर किया है। कोरोना संकट कई अर्थों में इस बात की पुनर्पुष्टि है की मानव सभ्यता कई बार बिना युद्ध के भी कभी–कभी भीषण त्रासदियों का सामना कर सकती है, यह अलग बात है की कई विशेषज्ञ इसे द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात का सबसे गंभीर मानवीय संकट की संज्ञा दे रहे हैं। प्रस्तुत लेख कोरोना वायरस से उपजे महामारी संकट के वैश्विक सन्दर्भ तथा भारत जैसे देश की विस्तृत भूमिका का विश्लेषण करने का एक प्रयास है।

कोरोना संकट से उत्पन्न परिदृश्य ने सर्वप्रथम वर्तमान विश्व व्यवस्था के पुनर्निर्धारण की आवश्यकता को चिन्हित किया है। कोरोना महामारी ने विकासशील एवं विकसित देशों के बीच तथाकथित अंतर को अर्थहीन कर दिया है। तभी तो संयुक्त राज्य अमेरिका जैसा देश भारत से इस बीमारी से लड़ने हेतु दवा निर्यात करने का अनुराध करना पड़ रहा है। विश्व में लगभग 100 वर्ष तथा 21वीं सदी के आरंभिक दशक में भी क्रमशः स्पेनी फ्लू तथा बर्ड फ्लूध सार्स जैसी महामारियाँ देखने में आईं परन्तु जिस स्तर पर कोरोना ने वैश्विक सहयोग की नयी संभावनाओ को प्रकट किया है वह अपने आप में सर्वथा नये आयामों से परिपूर्ण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना संकट को एक पैनडेमिक (वैश्विक महामारी) घोषित करते ही स्वास्थय जैसे मुद्दे पर बेहतर अंतर्राष्ट्रीय समन्वय की आवश्यकता रेखांकित हुई। जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व के देशों में राष्ट्रसंघ के रूप में सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा का उदय हुआ उसी प्रकार कोरोना संकट ने अपने विश्व्यापी प्रसार के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समेकित सामूहिकता को सुनिश्चित कर दिया है। यों भी, अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिनियम (२००५) की धारा ४४ विश्व समुदाय से यह अपेक्षा करता है की वह ऐसे वैश्विक स्वास्थ्य संकट की स्थिति में

वायरस के स्त्रोत तथा उससे निपटने के प्रयासों में सहयोग करेंगे। दी ग्लोबल अलायन्स फॉर वैकसिन्स एंड इम्युनाईजेशन (GAVI) ऐसा ही एक वैश्विक सहयोग संगठन है जो विकासशील देशों को घातक रोगों से लड़ने हेतु कम कीमत पर टीके उपलब्ध करवाता है। कोरोना संकट ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा गावी जैसी उसकी अनुषंगी संस्थाओ की प्रासंगिकता में वृद्धि की है।

यदि नीतिगत दृष्टिकोण से समझा जाये तो कोरोना संकट ने वैश्विक तथा स्थानीय, दोनों ही स्तरों पर स्वास्थ्य सेवाओं तथा उससे सम्बद्ध ढाँचागत सुविधाओं की खामियों को उजागर करते हुए इस क्षेत्र में वैश्विक समन्वय की संभावनाओ को चिन्हित किया है। यूरोप जैसा महाद्वीप भी, जो अपनी समुन्नत तथा दक्ष स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जाना जाता है, सहसा आई इस महामारी से उत्पन्न दबाव झेलने में कठिनाई का अनुभव कर रहा है। यह भारत तथा चीन जैसे देशो के लिए एक विशेष चुनौती है, जहाँ विश्व की लगभग आधी आबादी निवास करती है? लगभग १०० वर्ष पूर्व विश्व में फैले स्पैनिश फ्लू से आज भी कई सबक लिए जा सकते हैं। तब के साम्राज्यवादी बनाम औपनिवेशिक देशों का कृत्रिम बंधन आज विद्यमान नहीं है, अतः आज विश्व स्तर पर स्वास्थय समस्याओं तथा उनके जुड़े शोध एवं निदानों के क्षेत्र में सहयोग की अपरिमित संभावनाएं हैं। ब्राजील तथा अमेरिका को कोरोना से लड़ने हेतु हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन नामक दवा के निर्यात का निर्णय कर भारत ने सामूहिक सहयोग की इसी सम्भावना का अनुमोदन किया है। साथ ही, इस तथ्य की भी पुष्टि हुइ है कि भू–मंडलीकरण के इस दौर में जैसे कोई भी समस्या स्थानीय नहीं हो सकती, ठीक उसी प्रकार उसका समाधान भो सामूहिक योजना से ही संभव है।

कोरोना संकट का आर्थिक नीतिगत सन्दर्भ अत्यंत व्यापक तथा दूरगामी होगा। अभी से ही आर्थिक विशेषज्ञ कोरोना संकट से उपजी आर्थिक चुनौतयों की तुलना वर्ष १९२९ तथा २००८ के वैश्विक आर्थिक महामंदियों से कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है की वैश्विक अर्थव्यवस्था के विभिन्न मानदंडों को समष्टि रूप से प्रभावित करने के साथ–साथ कोरोना संकट विशेष रूप से विकासशील देशों की मध्यम तथा निम्न–मध्यम आय वर्ग के लोगो पर गंभोर आर्थिक दुष्प्रभाव डाल सकता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अपनी एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया है कि कोरोना संकट के कारण असंगठित क्षेत्र में बेरोजगारी बढ़ेगी। तात्कालिक रूप से, वर्तमान संकट ने विकसित तथा विकासशील देशों के समक्ष, समान रूप से, उपलब्ध सीमित आर्थिक संसाधनों के कुशल आवंटन तथा दक्ष उपयोग की चुनौती प्रस्तुत की है। इसका अर्थ यह है कि अर्थव्यस्थाओं

को यह निर्णय लेना होगा कि वे अपने संसाधनों को किन क्षेत्रों में किस प्रकार आवंटित करें जिससे आर्थिक और सामाजिक समरसता सुनिश्चित की जा सके। इसका एक अच्छा उदहारण फ्रांस की एक लोकप्रिय परफ्यूम बनाने वाली कंपनी लुइस वुइत्तों (**Louis Vuitton**) है जिसने कोरोना वायरस से लड़ाई में सहयोग करने हेतु परफ्यूम बनाना छोड़ कर फेस मास्कध्हैण्ड सैनीटैजर का उत्पादन शुरू कर दिया। भारत जैसे देश को यह नियत करना होगा कि भविष्य में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा वैज्ञानिक शोध जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कितनी आर्थिक प्राथमिकता देता है। आर्थिक संकट के इस स्वरुप ने कही–कहीं देशों के मध्य सहयोग की भावना को अस्थाई रूप से कुप्रभावित किया है क्योंकि कई राष्ट्र अपने आर्थिक हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं। उदाहरणस्वरुप, यूरोपीय संघ में इटली तथा स्पेन, जो कोरोना महामारी से सबसे अधिक प्रभावित देश रहे हैं, के आर्थिक ऋण–भार को संघ के सभी देशों में बराबर वितरित करने की मांग पर जर्मनी के विरोध के कारण गतिरोध उत्पन्न हो गया है। विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्संगठन हेतु गतिरोध से अधिक परस्पर सहयोग अधिक प्रासंगिकता होगा।

कोरोना संकट ने विभिन्न सामाजिक सरोकारों को भी झकझोर दिया है। आर्थिक संकट के कारण समाज के एक हिस्से की सामाजिक असुरक्षा स्पष्ट दिखलाई पड़ रही है। कोई भी महामारी विभाजनकारी नहीं होती क्योंकि वह जाति, धर्म और देश में विभेद नहीं करती। लेकिन कोरोना जैसी महामारी के विरुद्ध प्रतिक्रिया ने निश्चित ही सामाजिक दरारों को प्रस्फुटित किया है। इस प्रक्रिया ने भू–मंडलीकरण के कतिपय कमियों को भी उजागर किया है। निश्चय ही, वर्तमान संकट ने समावेशी शासन की आवश्यकता को पहले से ज्यादा प्रासंगिक बना दिया है। खाद्य एवं आजीविका की सुरक्षा, बेहतर स्वास्थ्य तथा शिक्षा व्यवस्था तक सबकी पहुँच सुनिश्चित करना सरकार का प्राथमिक दायित्व होना चाहिए। ऐसे सामाजिक लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र पहले ही सहस्राब्दी लक्ष्यों में समाहित कर चुका है। अतः कोरोना संकट ने समावेशी शासन की उपयोगिता को और विस्तृत कर दिया है।

विश्वव्यापी संकट के इस दौर में भारत एक विश्व नेता के रूप में उभरा है। भारत द्वारा दक्षिण एशिया सहयोग संगठन के देशों को कोरोना से संकट निपटने हेतु संयुक्त सहयोग का निमंत्रण इस बात का द्योतक है कि वह सार्क जैसे मंचों की भूमिका को केवल राजनीतिक सहयाग तक ही सीमित नहीं रखना चाहता। अमेरिका को कोरोना से लड़ने हेतु औषधि आपूर्ति कर भारत ने 'मेडिकल कूटनीति' द्वारा यह प्रमाणित किया है कि वैशविक एवं मानवीय आवश्यकताओं तथा घरेलू परिस्थितियों के मध्य संतुलन बनाते हुए विदेश नीति का सफल संचालन संभव है।

कोरोना महामारी ने संकट के अतिरिक्त विश्व नीति एवं राजनीति को कुछ सकारात्मक सन्देश भी दिये हैं। सबसे अप्रत्याशित संकेत पर्यावरण के क्षेत्र में दृष्टिगोचर है। कोरोना के कारण सीमित हुए मानवीय गतिविधियों ने प्रदूषण को काफी कम किया है, वन्य प्राणियों की गतिशोलता में नव्यता का संचार हुआ है। वायुमंडल तथा जलमंडल स्वच्छ होने से नित नयी प्राकृतिक परिघटनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं, गंगा तथा यमुना जैसी नदियों में प्रदूषण का स्तर बहुत कम हुआ है तथा जालंधर (पंजाब) से हिमाचल प्रदेश की धौलाधार पर्वतश्रेणी लगभग १६० किलोमीटर की दूरी से भी दृष्टव्य हो रही है। अतः यह इस बात का संकेत है कि यदि मानव जाति अपनी भौतिक आवश्यकताओं को नियंत्रित कर लेती है तो उत्तर–कोरोना कालीन विश्व व्यवस्था निश्चय ही अनेक समस्याओं से मुक्ति प्राप्त कर सकेगी। यह गाँधी तथा लियो टॉलस्टॉय जैसे महान विचारकों के चिंतन के साथ एक उत्तम तारदम्य तथा अनुकूलन ही होगा, जहाँ मानव, पादप तथा जंतु जगत के मध्य अप्रतिम सामंजस्य की स्थिति होगी।

♦♦♦♦♦

10

भारत में करोना संक्रमण और राजनीति में संक्रमण

डॉ अमित अग्रवाल

सहायक प्रोफेसर, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

भारत लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जिसे राज्यों का संघ कहते हैं। 28 राज्यों और केंद्र शासित क्षेत्र मिलकर भारत का एक संघ बनाते हैं। केंद्र में इस समय भारतीय जनता पार्टी की सरकार है इसके साथ साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, कर्नाटक, आदि राज्य में यह दल सत्तारूढ़ है। पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, झारखंड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में विपक्षी दलों की सरकार है। कोरोना एक वैश्विक बीमारी है, जिसकी शुरुआत चीन के वुहान प्रांत से हुई है। अंतरराष्ट्रीय नियमों और मानवता को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने प्रवासी भारतीयों को और विदेशी पर्यटकों को भारत में आने दिया जिसके कारण यह संक्रमण भारत में फैल गया। देश में चार राष्ट्रीय दल, 200 से अधिक क्षेत्रीय दल एवं 2,000 से अधिक पंजीकृत दल हैं, जिसके कारण हर मुद्दे पर राजनीति होती है। पीएम मोदी ने 24 मार्च को देश भर में लॉकडाउन की घोषणा की है। अतः हम उन कारणों का विश्लषण करेंगे जिसके कारण कोविड–19 नीति पर राजनीति शुरू हो गई है।

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने प्रेस कान्फ्रेंस में जब ये मुद्दा उठाया कि भाजपा को कोरोना से ज्यादा उनकी सरकार गिराने में दिलचस्पी थी इसीलिए लॉकडाउन इतनी देरो से किया गया और कोरोना ने विकराल रुप ले लिया। मोदी ने जब पहली बार स्वास्थ्यकर्मियों के लिए उत्साह बढ़ाने के लिए कहा तब और बाद में जब इस संक्रमण के खिलाफ एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए ए लाइट बंदकर मोमबत्ती जलाने के लिए कहा तब भी–मोदी को आम से लेकर खास लोगों तक का साथ मिला. कुछ अति उत्साही मोदी समर्थकों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मोदी के ताली बजाने और दिया जलाने के बात के पीछ वैज्ञानिक आधार भी तलाश लिया।

इसके अलावा भारतीय मीडिया का एक तबका कोविड–19 संक्रमण फैलाने के पीछे मुसलमानों के हाथ होने जैसे अभियान भी चला रहा है. क्योंकि भारत के कुल कोरोना संक्रमण के एक तिहाई

मामले, उन मुसममानों लोगों में पाए गए हैं जो मार्च महीने में नई दिल्ली में इस्लामिक धार्मिक आयोजन में शामिल हुए थे। ये देखते हुए बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी नेताओं से संक्रमण के फैलाने के मुद्दे को सांप्रदायिक रंग न देने अपील की। अंग्रेजी अखबार द टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक नई दिल्ली जैसे महानगरों में जरूरी खाद्यान्नों की आपूर्ति में कमी होने की खबरें आने लगी हैं. बिहार में कोरोना से प्रभावित लोगों के लिए सीएम राहत कोष में आने वाले दान को लेकर भी राजनीति शुरू हो गई है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एक ट्वीट के जरिए डिप्टी सीएम सुशील मोदी और नीतीश सरकार से सीएम राहत कोष में आ रहे दान को लेकर सीधा जवाब मांगा है। तेजस्वी यादव ने लॉकडाउन के 18 दिन बाद गरीब और दैनिक मजदूरों के खाने का मामला भी उठाया। बिहार सरकार से आग्रह है तुरंत व्यवस्था को ठीक कर जरूरतमंदो को राशन और मदद करने की अपील की है। मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने सरकार को खर्चे कम करने के सुझाव देकर खुद को किनारे कर लिया है। इस सुझाव में मीडिया इंडस्ट्री को दिए जाने वाले विज्ञापनों पर दो साल की पाबंदो लगाने का सुझाव भी शामिल है।

भारत दुनिया के दूसरे देशों को एंटी मलेरिया ड्रग्स मुहैया करा रहा है, इससे देश की मेडिकल डिप्लोमेसी मजबूत हुई है। अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कोविड–19 संक्रमण के इलाज में हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन को गेम चेंजर दवा बताया है. खस्ताहाल मेडिकल सुविधाएं और आर्थिक मुश्किलों की शुरुआत, उनके सामने बड़ी चुनौतियां साबित होंगी. भारत सरकार ने नवंबर, 2019 में संसद को बताया था कि देश भर में प्रति 1,445 लोगों पर एक डॉक्टर मौजूद हैं। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक प्रति एक हजार लोगों पर एक डॉक्टर से कम है. भारतीय मीडिया की रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि देश में मेडिकल उपकरणों की भारी किल्लत है. इसमें डॉक्टरों के लिए पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) और मरीजों के लिए वेंटिलेटर की कमी शामिल है। इंडिया टुडे की एक रिपोर्ट के मुताबिक ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (एम्स) के रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन ने छह अप्रैल को मोदी को पत्र लिखकर बताया कि पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई), कोविड–19 की टेस्ट करने वाले उपकरण और क्वारंटीन की सुविधाओं को बताने पर उन्हें निशाना बनाया जा रहा है।

अब तृणमूल कांग्रेस इस मुद्दे को जून तक होने वाले नगर निगम चुनावों और अगले साल के विधानसभा चुनावों में भुनाने का प्रयास कर रही है। उसके बाद इसकी काट के लिए भाजपा ने भी कोलकाता में राहत सामग्री के साथ उतरने का फैसला किया, लेकिन पुलिस ने उसके एक नेता सब्यसाची दत्त को ऐसा करने से रोक दिया। पार्टी के प्रदेश महासचिव सायंतन बसु को भी

पुलिस ने ऐसा करने करने की अनुमति नहीं दी। उसके बाद दोनों दलों में बयानबाजी तेज होने लगी है। भाजपा का आरोप है कि पुलिस प्रशासन तृणणूल कांग्रेस के नेताओं को तो राहत बांटने की अनुमति दे रहा है लेकिन विपक्ष को ऐसा करने से रोक रहा है।

मौजूदा लॉकडाउन के चलते देश भर में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लाखों गरीब मजदूर प्रभावित हुए हैं. इन लागों को मुश्किलों से निकालने की चुनौती भी पीएम मोदी के सामने होगी. अचानक लिए गए देशव्यापी लॉकडाउन के फैसले से महानगरों में लाखों लोगों के पास ना तो नौकरियां बचीं और ना ही रहने का ठिकाना. इसके चलते ही हजारों लोग गांवों में अपने घरों की तरफ लौट गए हैं। दिल्ली एनसीआर का हाल बुरा है, जहां मजदूर, रिक्शाचालक और फैक्ट्री कर्मचारी अपने अपने गांव की ओर लौटने के लिए हजारों की तादाद में निकल पड़े हैं। दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पर हमला बोला। शनिवार को उन्होंने ट्वीट करके लिखा, मुझे बहुत दुख है कि कोरोना महामारी के बीच बीजेपी नता टुच्ची राजनीति पर उतर आए है। सीएम योगी आदित्यनाथ की सरकार ने आरोप लगाया है, कि अरविंद केजरीवाल ने बिजली पानी काट दिया, इसलिए लोग दिल्ली से जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में कोरोना के भयंकर संकट के बीच राजनीति गरमा गई है। मामला राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी द्वारा सूबे के अधिकारियों के साथ बैठक के साथ शुरू हुआ। जब देश में इस बीमारी का संक्रमण चरम पर हो, तब राष्ट्रीय हित में दलीय राजनीति से ऊपर उठकर इस बीमारी को खत्म करने के लिए केंद्र सरकार राज्य सरकार और स्थानीय सत्ता को साथ साथ चलना होगा, अन्यथा जनता कष्ट में रहेगी और जनाक्रोश में सत्तारूढ़ दलों की सत्ता भी हिल जाएगी। अभी वक्त है की इस संक्रमण को रोकने के लिए सब दल सर्वसम्मति से नीति तैयार करें और उसका क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से करें जिससे भारत मई के अंत तक इस संक्रमण से मुक्त हो जाए। अन्यथा भारत में महंगाई गरीबी बेतहाशा बढ़ जाएगी। समावेशी विकास का सपना टूट जाएगा और भारत एक दशक पीछे चला जायेगा।

♦♦♦♦♦

11

कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ महेश कौशिक

प्रवक्ता– अर्थशास्त्र, रानी दत्ता आर्य विद्यालय, दरियागंज, दिल्ली

जैसा की संभावना थी प्रधानमंत्री जी द्वारा लॉकडाउन को तीन मई तक के लिए बढ़ा दिया गया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इस समय विश्व के समक्ष सबसे बड़ा कोई संकट है तो वह है कोरोनावायरस से जीवन की रक्षा। अभी हम सब मनुष्य जीवन को लेकर चिंतित हैं, ईश्वर ने करें कि वह अन्य जीवों तक फैले। यद्यपि इस खबर की पुष्टि नहीं हुई है कि हांगकांग में घर में रहने वाले पालतू कुत्ते तक को कोरोना का संक्रमण फैल गया है। क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो उसकी भयावहता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। जब मनुष्यों को ही एक स्थान पर जो कि उनका अपना घर है उसमें रोक पाना इतना कठिन है तो जानवरों के लिए तो यह असंभव हो जाएगा। पूरा विश्व अभी मनुष्य जीवन को लेकर चिंता ग्रस्त है तो साथ ही साथ भविष्य की अनिश्चितताओं को लेकर आशंकित भी है। इन आशंकाओं का आर्थिक पक्ष भी है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारतीय अर्थव्यवस्था जो कि दुनिया की महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और पिछले कुछ समय मैं विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से प्रभावित होती नजर आ रही थी उसके लिए भी यह आपदा एक बड़े आर्थिक संकट का आधार बन सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर गत वर्ष 2,019–20 में गिरकर लगभग 5 फीसदी तक आ गई है जो कि उससे पिछले वर्ष 2018–19 में 6.9 प्रतिशत पर थी। ऑटोमोबाइल सेक्टर तथा रियल एस्टेट सेक्टर पहले से ही मंदी की मार झेल रहे हैं। आने वाला वक्त इन दोनों क्षेत्रों के लिए अधिक संकट पूर्ण रहने वाला है। क्योंकि इस आपदा से निकलने के दौरान इन दोनों ही क्षेत्रों में मांग को उत्पन्न करना सरकार के लिए अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण रहने वाला है। एक और नकदी की कमी से जूझ रहे बाजार तथा दूसरी ओर उत्पादन, आय तथा रोजगार में होने वाली कमी इन दोनों क्षेत्रों को बड़ी सीमा तक प्रभावित करेगी।

विश्वव्यापी मंदी और कोरोना के इस विश्वव्यापी संकट ने बेरोजगारी और गरीबी की समस्याओं को और अधिक गंभीर बना दिया है। भारत में इस वर्ष जनवरी में बेरोजगारी की दर 7.16 प्रतिशत रही जबकि शहरी बेरोजगारी की दर 9.7 प्रतिशत पर पहुंचकर अभी तक के अपने उच्चतम स्तर के के पास रही। इस बात की पूर्ण संभावना है कि आने वाले समय में यह निश्चित रूप से 10 प्रतिशत से बढ़कर 12 प्रतिशत के आसपास तक पहुंच सकती है जो अपने आप में सरकार के लिए बड़ी चिंता का विषय बन सकता है।

भारत में श्रमिकों का 94 फीसदी भाग अनौपचारिक में संलग्न है जिसका भारत के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान लगभग 45 फीसदी है। अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक वर्ग पर अनिश्चितता की जो तलवार सदैव लटकती रहती है, इस संकट की स्थिति में वह उनके गले पर चल गई है। सभी जगह पर लॉकडाउन होने के कारण शहरों में फैक्ट्रियों पर तालाबंदी हो गई है जिसके कारण श्रमिकों को मजबूरी मैं अपने–अपने गृह क्षेत्रों की ओर लौट जाना पड़ रहा है। दूसरी ओर गरीबी, जो 2014 में योजना आयोग के अनुमान के मुताबिक 29.5ः थी। अर्थात यह वो लोग थे जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रहे थे। साधारण शब्दों में कहें तो यह वह जनसंख्या थी जिसे दो समय का भोजन भी उपलब्ध नहीं था। खाद्यान संकट की स्थिति में बफर स्टॉक कब तक वर्तमान मांग को पूरा करता रहेगा यह अपने आप में एक बड़ी चिंता का विषय है। यद्दिप प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि तीन महीनो के लिए पर्याप्त खद्यान उपलब्ध हैं। किन्तु बफर स्टॉक समाप्त होने पर अर्थव्यवस्था को कोई अन्य विपरीत स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा इसे तो कोई सुनिश्चित नहीं कर सकता। साथ ही इस दौरान किसानों की जो आर्थिक स्थिति खराब होगी उसके लिए भी सरकार को राहत देने का कार्य तुरंत करना होगा. यद्दिप दो हजार रूपये महीना के हिसाब से अभी छ हजार रूपये उनके खाते में डाले घोषणा हुई है। किन्तु केवल इतने से समस्या का समाधान नहीं होने वाला है. सरकार को बड़े कदम थाने के लिए तैयारी करनी होगी। क्योंकि लॉकडाउन के इस समय में भी यदि जनता की खाद्यान्न संबंधी आवश्यकताएं सरलता से पूरी हो पा रही है तो इसका श्रेय निश्चित रूप से ही भारतीय कृषि और किसानों को जाता है।

सरकार को इस दिशा में समय रहते आवश्यक कदम उठाते हुए राजकोषीय घाटे की अधिक चिंता ना करते हुए एक और उद्योग क्षेत्र को आर्थिक सहायता देनी होगी जिससे कि आय में कटौती और मजदूरों की छंटनी ना हो और यह मांग में कमी का कारण न बन सके। यद्दिप अर्थशास्त्रियों द्वारा इसे 5 प्रतिशत की सुरक्षित सीमा के अंदर ही रखने का सुझाव दिया दिया

जाता है किन्तु यह स्थिति एक असमान्य स्थिति है इसलिए इसकी सीमा बढ़ाई जा सकती है। दूसरी ओर ब्याज दर में कटौती के माध्यम से बाजार में खरीदारी का वातावरण तैयार करना होगा। यदि सरकार इन दोनों मोर्चों पर एक साथ कार्य करेगी तो इस बात की संभावना रहेगी कि उद्योग क्षेत्र को तीव्र मंदी का सामना न करना पड़े। एक और क्षेत्र जहां पिछले कुछ वर्षों में मंदी की जबरदस्त मार पड़ी है वह है भूमि भवन बिक्री व्यापार क्षेत्र जहां सरकार के तमाम तरह के प्रयासों के बावजूद मंदी ने अपने पैर पूरी तरह पसार लिए हैं। आने वाला वक्त इस क्षेत्र के लिए और अधिक संकट पूर्ण है। स्थिर संपत्ति के मूल्य लगातार गिर रहे हैं क्योंकि एक और लोगों के पास नकदी की कमी हो रही है तो दूसरी और मोदो सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों ने काले धन की वृद्धि पर लगाम लगाई है जिसके कारण से स्थिर संपत्ति की मांग में भारी गिरावट आई है जो कि भविष्य में भी जारी रहने की पूरी संभावना बनी हुई है। जब तक सरकार बैंकों की संपत्ति ऋण देने की कार्यप्रणाली को ठीक नहीं करेगी और उसे लालफीताशाही और भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं करेगी तब तक इस क्षेत्र में मांग को उत्पन्न करना असंभव बना रहेगा। प्रधानमन्त्री जी ने जैसा की सभी नागरिकों से आवाहन किया है की इस समय का रचनात्मक सदुपयोग करें, वास्तव में अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भी व्ही करन की आवश्यकता है। बहुत से सकरात्मक हैं जिन पर ध्यान देकर हम इस संकट की स्थिति से न केवल अथ्वयवस्था को बाहर निकाल सकते हैं बल्कि उसे और अधिक मजबूती दे सकते हैं। जैसे हमारा सेवा क्षेत्र पूरे विश्व को अर्थव्यवस्था से जोड़ सकता है, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि वह क्षेत्र हैं जो रोजगार तथा आय में पर्याप्त वृद्धि की क्षमता रखते हैं।

आने वाले समय में योग विशेषज्ञों तथा आयुर्वेद के लिए विश्व स्तर पर एक नए बाजार का निर्माण किया जा सकता है जो आर्थिक गतिविधियों को नई स्फूर्ति प्रदान कर सकता है। वास्तव में हमें अपनी अद्वितीय विशेषताओं को अपनी ताकत बनाना होगा तभी हम इस संकट का सामना सफलतापूर्वक कर पाने में सफल होंगे।

♦♦♦♦♦

12

कोरोना की चपेट में धार्मिक और राजनीतिक दृष्टिकोण

रजनी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत जैसे विशाल संस्कृतियों भरे देश को एकता का प्रतीक माना जाता है जिसे कभी प्रश्न के कटघरे में किसी ने खड़ा करने का प्रयास नहीं किया। यहां कि संस्कृति और परंपरा ही एकता का सबसे बड़ा स्रोत है। इस परंपरा को जो अब तक न हिला सका उसे एक कीटाणु ने हिला कर रख दिया। यह परिस्थिति केवल भारत में ही नहीं अपितु यह पूर्ण विश्व में एक महामारी के रूप में उभरी है जिसका प्रारंभ चीन से होकर भारत तक पहुंचा। जहां इसने भारत की व्यवस्था को जड़ से हिला दिया, इसने आर्थिक व्यवस्था के साथ–साथ राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था को भी झुकने पर विवश कर दिया है। इसका सबसे अधिक प्रभाव भारत में मंदिर, मस्जिद, चर्च के साथ लोकप्रिय उत्सव के रूप में मनाएं जाने वालों त्यौंहारों पर भी देखने को मिला जैसे नवरात्रे, हनुमान जयंती, शब्ब–ए–रात, रोज़े इत्यादि। जिसे सरकार द्वारा दिशा–निर्देशों के उपरांत बंद करने के आदेश के साथ भक्तों का दौरा करने पर भी पाबंदी लगा दी गयी, कन्या भोजन को निषिद्ध किया गया। परंतु इस प्रकार के आदेश के अंतराल में जनता के द्वारा किए जाने वाले पालन में कुछ ऐसे भी असामाजिक तत्व शामिल थे जिन्होने अपने धार्मिक प्रकारों को राजनीतिक रंग चढ़ाने का कार्य करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण है तब्लीगी जमा़त। 13–15 मार्च को समूह द्वारा आयोजित एक धार्मिक सभा ने भारत में सबसे बड़ा कोरोना वायरस पैदा किया।

तब्लीगी जमात क्या है?

लगभग 100 वर्ष पूर्व देवबंदी इस्लामिक विद्वान मौलाना मुहम्मद इलियास खंडालावी द्वारा एक धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में स्थापित, तब्लीगी जमात एक धार्मिक विश्वास फैलाने के लिए एक समाज में परिवर्तित हो जाते है। जोकि पूर्ण रूप से गैर–राजनीतिक आंदोलन है। जमात का उद्देश्य पैगंबर मोहम्मद – कालीमाह (विश्वास की घोषणा), सलात (पांच बार की प्रार्थना), इल्म–ओ–जिक्र (ज्ञान), इकराम–ए–मुस्लिम द्वारा इस्लाम के मूल सिद्धांतों का प्रचार करना है।

मुस्लिम का सम्मान), इखलास–ए–नियात (इरादे की ईमानदारी) और तफ्रीह–ए–वक्त (बख्शते समय) इत्यादि इसमें शामिल है। इसे विश्व में एक प्रभावशाली आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में माना जाता है, जमात को अब पाकिस्तान और बांग्लादेश में केंद्र से निकलने वाली गुटबाजी से त्रस्त माना गया है।

यह कैसे कार्य करता है?

मुख्य रूप से दक्षिण एशिया में इसके 150 से 250 मिलियन सदस्य होने का अनुमान है, जमात सदस्य केवल मुसलमानों के बीच काम करते हैं जो उन्हें पैगंबर मोहम्मद द्वारा अभ्यास किए गए जीवन के तौर–तरीके सिखाते हैं। मण्डली में, प्रचारकों के विभिन्न छोटे समूह उनके नेताओं के रूप में एक वरिष्ठ के साथ गठित किए जाते हैं। ये समूह मुसलमानों के बीच इस्लामिक प्रथाओं को फैलाने के लिए मस्जिदों के माध्यम से नामित स्थलों का दौरा करते हैं।

COVID-19 और तब्लीगी जमात

प्रचारकों की मण्डली मार्च के आरंभ में बंगलावाली मस्जिद में निजामुद्दीन क्षेत्र में हुई जहाँ जमात का मरकज (मुख्यालय) स्थित था। ऐसा माना जाता है कि इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका और किर्गिस्तान के 800 से अधिक विदेशी नागरिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। सरकार के अनुसार, 1 जनवरी से जमात की गतिविधियों में भाग लेने के लिए 1 जनवरी से 70 देशों के 2,000 से अधिक विदेशी भारत पहुंचे और तालाबंदी के कारण निजामुद्दीन में फंस गए। उनमें से कई के पास छह महीने का पर्यटक वीजा था। इनमें एक को कीटाणु से पॉजिटिव पाया गया जो उस समय तेलंगाना में था जिस कारण गृह मंत्रालय ने सभी राज्य सरकारों को 21 मार्च को जमात के प्रचारकों क बारे में सचेत किया।

जमात का दावा है कि निजामुद्दीन मरकज में लगभग 2,500 सदस्य थे। 22 मार्च को जनता कर्फ्यू '' की अचानक घोषणा के बाद, दिल्ली सरकार द्वारा इसी तरह की कार्रवाई के बाद और अंततः प्रधानमंत्री द्वारा 21 दिन की तालाबंदी की घोषणा के उपरांत, बड़ी संख्या में जमात के सदस्य मरकज के में फंस गए। अब तक फिलिपिनो नेशनल सहित तब्लीगी जमात मण्डली के 10 प्रतिभागियों ने कोरोनोवायरस से दम तोड़ दिया है, जबकि मर्काज में रहने वाले 285 लोगों को संदिग्ध कोरोनावायरस मामलों के लिए अस्पतालों में भर्ती कराया गया था जिसमें संख्या अभी वृद्धि पर है।

भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने रविवार को संवाददाताओं को बताया, 'वर्तमान में हमारी दोगुनी दर 4.1 दिनों की है। तबलीगी जमात के अतिरिक्त मामलों की रिपोर्ट नहीं आई होती तो दोहरीकरण दर 7.4 दिन होती।' वहीं फैज़ल मुस्तफ़ा जो कानूनी विशेषज्ञ है कहते है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग इसे एक साजिश करार दे रहे हैं और कोरोना जिहाद जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। धार्मिकता की राजनीति में एक वैश्विक महामारी के अंतराल लापरवाही के जमात नेतृत्व पर आरोप लगाते हुए, विशेषज्ञों और नागरिक समाज के सदस्यों ने इसपर देरी से प्रतिक्रिया के लिए केंद्र सरकार को दोषी ठहराया और विदेशियों, विशेष रूप से COVID–19 हॉटस्पॉट देशों जैसे कि मलेशिया और इंडोनेशिया से भारत में आने की अनुमति दी।तेलंगाना सरकार में मंत्री के टी रामा राव ने अल जजीरा को बताया कि राज्य में उपस्थित लोगों की पूरी सूची थी और उनमें से लगभग सभी और उनके संपर्कों पर नजर रखी गई थी। आंध्र प्रदेश में, राज्य के पुलिस महानिदेशक, दामोदर गौतम सवांग ने अल जजीरा को बताया कि 25 अन्य लोगों के साथ 100 प्रतिभागी संक्रमित थे, जो उनके संपर्क में आए थे। राज्य में 260 मामलों में से, 243 में जमात मण्डली के साथ संबंध थे।

दिल्ली सरकार के अधिकारियों ने तब्लीगी जमात पर अपने आदेश की अवहेलना करने का आरोप लगाया है, जिसने 50 से अधिक लोगों की सभा को रोक दिया था। मर्कज के यूट्यूब चौनल पर 19 मार्च को पोस्ट किए गए एक धर्मोपदेश के 28 मिनट के ऑडियो क्लिप में, जमात प्रमुख मौलाना साद ने कोरोनावायरस को 'अजाब' (भगवान की सजा) कहा और अपने अनुयायियों को मस्जिदों में चलने के लिए कहा। उन्होंने यह भी कहा कि मस्जिद में एकत्रित होने वाले लोगों को 'बातिल ख्याल' (झूठ) के रूप में और अधिक संक्रमण होगा। बाद में एक क्लिप में, उन्होंने अपने अनुयायियों से महामारी पर सरकार के दिशानिर्देशों का पालन करने का आग्रह किया। जैसा कि दबाव बनाया गया था, दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने 31 मार्च को ब्रिटिश युग की महामारी रोग अधिनियम के तहत एक मामला दर्ज किया, जिसमें मौलाना साद और मरकज प्रबंधन पर सामाजिक नियमों के उल्लंघन के साथ सरकारी नियमों को धता बताने का आरोप लगाया गया। साद के छिपने की अफवाहों को खारिज करते हुए, उनके वकील और जमात के प्रवक्ता, मुजीब–उर–रहमान ने कहा कि उन्होंने अदालत के सम्मन का जवाब यह कहकर दिया कि वह स्व–संगरोध में हैं और उनके व्हाट्सएप अधिकारियों को जानते हैं। इस बीच, जमात ने एक बयान में दावा किया कि 22 मार्च को अधिकारियों द्वारा प्रतिबंधां की घोषणा के तुरंत बाद प्रतिभागियों का प्रवेश रोक दिया गया था।

13 मार्च को, स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि यह स्वास्थ्य आपातकाल नहीं है। गुरुद्वारों (सिख मंदिरों), मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थलों में लोगों का रवैया भी यही था कि यह आपातकाल नहीं है यह वही रवैया था। परंतु, 'उन्होंने कहा कि मर्कज के लिए देश के बहुत से लोग वास्तव में अपने गृह राज्यों की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित हुए। कोरोना जिहाद जब ट्विटर पर ट्रेंड करने लगा, जिसमें कई सत्तारूढ़ पार्टीयों ने नेताओं ने धार्मिक सभा को 'कोरोना आतंकवाद' कहा – कई ने कहा कि इसने गवर्निंग पार्टी के इस्लामोफोबिया में संकेत दिया गया है। मुस्तफा ने अल जजीरा को बताया, 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग इसे एक साजिश करार दे रहे हैं और कोरोना जिहाद जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। सांप्रदायिक रूप से यह सही तरीका है। मीडिया ने भी इसमें एक शरारती भूमिका निभाई है' यद्यपि, दोष सरकार के दरवाजे पर डाल दिया 'सरकारों को धार्मिक लोगों की तुलना में अधिक तर्कसंगतता प्रदर्शित करनी है,'।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की कोरोना का कीटाणु न किसी धर्म से समाप्त हो सकता और न ही किसी राजनीति के धृणित खेल से, इसे समाप्त करने हेतु आवश्यकता है कि समाज को हिंदू–मुस्लिम जैसे साम्प्रदायिक शब्दों में न जकड़कर पुनः एकता के साथ लोकतंत्र को बचाएं रखने का प्रयास करना आवश्यक है जिसे सरकार के द्वारा दिए गए दिशा–निर्देशो का पालन करन के उपरांत ही प्राप्त किा जा सकता है। साथ ही इसके नकारात्मक प्रभाव के साथ इसके सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले प्रथम इसने परिवार शैली को अधिक बढ़ावा दिया जहां लाग परिवार से दूर रहने के लिए तत्पर रहते थे वह अब परिवार के पास लौटने के लिए जान की बाजी लगाने का भी तत्पर है। दूसरी ओर इसने वेदों की ओर लौटो जैसे मोदी जी द्वारा दिए गए 'दीये जलाने' के संदेश को जो की ऊर्जा के स्रोत का प्रतीक है वहीं तीसरा धार्मिक मान्यताएं जो लोगो में थी वह सभी परंपराओं को कोरोना घर पर बंद करके भी समाप्त नहीं कर पाया। नियमित होने वाले कार्यो में सभी कार्यो को भली–भांति संपन्न किा गया चौथा कार्य कट्टर धार्मिकता को समाप्त कर समाज सेवा की ओर लोगो को अग्रसर होते देखा गया है। वहीं कुछ अस्पतालों और चिकित्सकों के साथ होने वाला दुष्कर्म जिसे मुसलमानों द्वारा जो तब्लीगी जमात से जुड़े हुए थे द्वारा होने वाली घटना जिसके कारण यह आरोंपो के घेरे में आए है उन्हें नकारा नहीं ज सकता।

♦♦♦♦♦

13

कोरोना विपत्तिः भारत एवं विश्व

राम किशोर

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विश्व के अधिकतर भाग में कोरोना वायरस के कारण अस्तव्यस्तता का वातावरण बना हुआ है। कोरोना वायरस एक जानलेवा महामारी बन चुका है। कोरोना वायरस का संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के छूने, छींकने या खांसने से प्रसारित हो सकता है। हल्का बुखार, खांसी, भारीपन आदि इस वायरस के लक्षण है। यह वायरस चीन के वुहान शहर से निकलकर पूरी दुनिया में फैल चुका है। कोरोना वायरस (कोविड–19) ने चीन, अमेरिका, इटली, दक्षिण कोरिया, ईरान, ब्रिटेन, जापान आदि देशों में गम्भीर समस्या उत्पन्न कर रखी है।

विश्व में कोरोना वायरस के कारण अब तक लाखों व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है, जबकि लाखों व्यक्ति संक्रमित हैं एवं निरन्तर गति के साथ संक्रमित व्यक्तियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। अर्थात, इसकी चपेट में आकर मृत होने वाले व्यक्तियों की बड़ी संख्या को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया हैं। अब इस वायरस की विपत्ति से विश्व को सुरक्षित करने के लिए कई देशों के वैज्ञानिक कोरोना वायरस की वैक्सीन बनाने में कार्यरत है।

भारत में कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्तियों की संख्या एवं संक्रमण से मृत होने वाले व्यक्तियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। रविवार, 12 अप्रैल 2020 को कोरोना वायरस से मृत्यु होने वाले व्यक्तियों की संख्या 308 हो गई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, देश में अब भी 7987 व्यक्ति कोरोना वायरस के संक्रमण से संक्रमित हैं, जबकि 856 व्यक्ति स्वस्थ्य हो चुके हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, रविवार, 12 अप्रैल 2020 शाम को लगभग 35 और व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। अब तक सबसे अधिक 149 मृत्यु महाराष्ट्र में हुई इसके पश्चात मध्य प्रदेश में 36, गुजरात में 25 और दिल्ली में 24 व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी हैं। पंजाब में 11 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है जबकि तमिलनाडु में 10 एवं तेलंगाना में 9 व्यक्तियों की मृत्यु हुई है।

यूरोप में इटली, स्पेन एवं फ्रांस में कोरोना वायरस का अत्यधिक प्रभाव दिख रहा है। जर्मनी में परिस्थिति अपेक्षाकृत वश में हैं। यद्यपि, अमेरिका में भी इस वायरस से मृत्यु का आंकड़ा निरन्तर बढ़ रहा है। कोरोना वायरस ने अमेरिका में सबसे अधिक समस्या उत्पन्न कर रखी है। अमेरिका में मृत व्यक्तियों की संख्या 22,115 से अधिक हो चुकी है। अच्छी बात यह है कि विश्व में बड़ी संख्या में लोग कोरोना वायरस के संक्रमण से स्वस्थ्य भी हो रहे हैं। चीन में भी इसका प्रभाव अधिकतया घट चुका है। दक्षिण कोरिया एवं जापान भी इस महामारी को नियत्रंण करने में अधिकतम सफल रहे हैं। कोरोना वायरस का संक्रमण निरन्तर बढ़ रहा है। इससे संक्रमित व्यक्तियों की संख्या विश्व में बढ़कर 18.54 लाख हो गई है। विश्व में कोरोना वायरस ने अब तक 1.14 लाख से अधिक व्यक्तियों का जीवन समाप्त कर चुका हैं।

निम्नांकित तालिका के माध्यम से हम देख सकते है कि विश्व के प्रमुख देशों में कोरोना वायरस से संक्रमित एवं मृत व्यक्तियों की संख्या कितनी है?

देश का नाम	कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या	कोरोना से मृत लोगों की संख्या
इटली	156,363	19,899
ईरान	71,686	4,474
दक्षिण कोरिया	10,537	217
अमेरिका	5,60,115	22,115
ब्रिटेन	78,991	9,875
स्पेन	166,831	17,209
जापान	7,370	123
जर्मनी	127,854	3,022
फ्रांस	132,591	14,393
स्विट्जरलैंड	25,449	1,115
ऑस्ट्रेलिया	6,359	61
बेल्जियम	30,589	3,903
नीदरलैंड	25,587	2,737
भारत	**7987**	308

Source:https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/coronavirus-which-country-in-the-world has-how-much-covid19-infected-patient/articleshow/74648830.cms_Dt. 10.04.2020

आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका में 5.3 लाख से अधिक व्यक्ति कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। यह संख्या चार देशों– स्पेन (1,63,027), इटली (1,52,271), जर्मनी (1,25,452) एवं फ्रांस (93,790) के रोगियों की कुल संख्या के लगभग समान है। मृत्यु के विषय में, अमेरिका एवं इटली के पश्चात स्पेन (16,606), फ्रांस (13,832) एवं ब्रिटेन (9,875) का क्रमांक आता है। अमेरिका की आर्थिक

राजधानी न्यूयॉर्क शहर विश्व में कोरोना वायरस का सबसे बड़ा केंद्र बनकर उभरा है, जहां अभी तक 8,627 व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी हैं, वहीं 1,80,000 से अधिक व्यक्ति कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। लगभग 83 लाख की जनसंख्या वाला यह शहर अमेरिका की सबसे घनी जनसंख्या वाले शहरों में से एक है।

कोरोना वायरस को वायरस को समाप्त करने के लिए विश्व स्तर पर रणनीतिः वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुके कोरोना वायरस (कोविड–19) के कारण विश्वभर में जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। अस्पतालों में रोगियों की संख्या दिन– प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, कार्यालय एवं स्टेडियम बंद हो रहे हैं। वित्तीय एवं आर्थिक गतिविधियों पर इसका बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प मिलकर कोरोना वायरस को समाप्त करने के लिए कार्य कर रहे हैं। दोनों देश मिलकर कोरोना वायरस से स्वयं को सुरक्षित करने की रणनीति पर कार्य कर रहे हैं। कोरोना वायरस के प्रसार की रोकथाम को लेकर ऑस्ट्रेलिया सरकार ने ऐसे सभी अनावश्यक आयोजनों पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की जिनमें 500 या उससे अधिक लोग इकट्ठा होंगे।

जापान की संसद ने शुक्रवार को एक अधिनियम को अधिनियमित किया जो देश के प्रधानमंत्री शिंजो आबे को देश में कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति बिगड़ने पर आपातकाल घोषित करने की अनुमति देता है। जर्मनी की चांसलर एंजला मर्केल ने कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए ऐसे अनावश्यक कार्यक्रमों को निरस्त करने की अपील की है जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों को सम्मिलित होना हों। वहीं, फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने घोषणा की है कि कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए अगले सप्ताह से विद्यालयलो को अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया जाएगा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपरोक्त कोरोना वायरस (कोविड–19) जो कि एक वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुका है। विश्व के सभी देशों को एक साथ संयुक्त रूप से कोरोना वायरस का सामना करना होगा जिसमें हम सब 'सामाजिक दूरी' नामक महत्वपूर्ण उपकरण को अपनाकर कोरोना वायरस के प्रसार को समाप्त कर सकते हैं।

♦♦♦♦♦

डी.सी.आर.सी.

विकासशील राज्य शोध केन्द्र

अकादमिक अनुसंधान केन्द्र भवन

गुरू तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007